शृङ्गारनिर्णय।

जिसे

व्योंगा ज़िला प्रतापगढ़निवासी श्रीयुत
कवि भिखारीदास उपनाम दासकवि
जी ने रसिकजनों के निमित्त
बनाया और जिसे
बाबू रामकृष्णवर्म्मा संपादक भारतजीवन ने
रियासत सूर्य्यपूरा से हाथ की लिखी हुई
प्रति पाकर उसे शुद्धकर छपवाया है।

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ।

सन् १८९५ ई०।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।८)

श्रीगणेशाय नमः

शृङ्गारनिर्णय ।

सवैया ।

मूस मृगेस बली वृष वाहन किङ्कर कीनो करोर तैंतीस को । हाथन में फरसा करवाल त्रिसूल धरे खल खोडबे खीस को ॥ जक्तगुरू जग की जननी जगदीस भरे सुख देत असीस को । दास प्रणाम करै कर जोरि गणाधिप को गिरिजा को गिरीस को ॥ १ ॥

कवित्त ।

मच्छ ह्वैके बेद काढ्यो कच्छ ह्वै रतन गाढ्यो कोल ह्वै कुगोल रद राख्यो सबिलास है । बावन ह्वै इन्द्र ह्वै नृसिंह प्रहलाद राख्यो कीनो ह्वै द्विजेस जाने छिति छत्र नास है ॥ राम ह्वै दसास्य-बंस कान्ह ह्वै संघार्‌यो कंस बौध ह्वैके कीनो जिन स्रावक प्रकास है । कलकी ह्वै राखे रहैं

हिन्दूपति पति देत म्लेच्छ हति मोच्छगति दास
ताको दास है ॥ २ ॥

दोहा ।

श्रीहिन्दूपति-रीझि हित समुझि ग्रन्थ प्राचीन ।
दास कियो शृङ्गार को निरनय सुनो प्रबीन॥३॥
सम्बत् विक्रम भूप को अट्ठारह सै सात ।
माधव सुदि तेरस गुरौ अरवर थल विख्यात॥४॥
बन्दौं सुकविन के चरन अरु सुकविन के ग्रन्थ ।
जातें कछु हौंहूं लह्यौ कविताई को पन्थ ॥ ५ ॥
जिहि कहियत शृङ्गाररस ताको जुगल बिभाव ।
आलम्बन इक दूसरौ उद्दीपन कविराव ॥ ६ ॥
बरनत नायक नायिका आलम्बन के काज ।
उद्दीपन सखि दूतिका सुख-समयो सुखसाज ॥

नायकलच्छण ।

तरुन सुघर सुन्दर सुचित नायक सुहृद बखानि ।
भेद एक साधारनै पति उपपति पुनि जानि ॥

साधारण नायक यथा—कवित्त ।

मुख सुखकन्द लखि लाजै दास चन्द ओप

चोप सो चुभत नैन गोप-तनुजान के । तैसो सब सुरभित बसन हिये की माल कानन के कुण्डल बिजायठ भुजान के ॥ नासा लखि सुक-तुण्ड नाभी पै सरस कुण्ड रद है दुरद-सुण्ड दे-खत भुजान के। नल को न लीजै नाम कामहू को कहा काम आगे सुखधाम स्यामसुन्दर सु-जान के ॥ ६ ॥

पति लक्षण – दोहा ।

निजब्याही तिय को रसिक पति ताकों पहिचान।
आसिक और तियान को उपपति ताकों जान॥

पति यथा—सवैया ।

छाड्यो सभा निसिबासर की मोजरे लगे पा-वन लाग प्रभातैं । हासबिलास तज्यो तिन सों जिन सों रह्यो है हँसि बोलि सदा तैं ॥ दास भोराई-भरी है वही पै प्रयोग प्रबीनो गनी गई यातैं । आई नई दुलही जब तें तब तें लई लाल नई नई बातैं ॥ ११ ॥

उपपति यथा ।

अलकावलि व्यालबिसाल घिरै जहँ ज्वाल

जवाहिर जोति गहै । चमकै बरुनी बरछी भुव खञ्जर कैवर तीच्छ कटाछम है ॥ बसि मैन महा ठग ठोढ़ी की गाड़ में हास के पास पसारे रहै। मन मेरे कि दास ढिठाई लखो तहँ पैठि मिठाई लिआयो चहै ॥ १२ ॥

नायक भेद—दोहा ।

अनुकूलो दच्छिन सठो धृष्ठिति चोराचार ।
इक नारी सों प्रेम जिहि सो अनुकूल बिचार ॥

पति अनुकूल यथा—सवैया ।

सम्भु सों क्यों कहिये जेहि ब्याहो है पारबती औ सती तिय दोऊ । राम समान कह्यो चहै जीय पै माया की सीय लिये रहै सोऊ ॥ दास जू जौ यहि औसर होवतीं तेरोई नाह सराइतीं वोऊ । नारि पतीब्रत हैं बहुतै पतिनीब्रत नायक और न कोऊ ॥ १४ ॥

उपपति अनुकूल यथा ।

तो बिन राग औ रङ्ग ब्रथा तुव अंग अनङ्ग की फौजन की सौं। मुसक्यान सुधारस भोजन

की तुव आनन आनँद खानन्ति की सौं ॥ दास के प्राण की पाहरू तू यह तेरे करेरे उरोजन की सौं । तो बिन जीबो न जीबो प्रिया मुहिँ तेरई नैन सरोजन की सौं ॥ १५ ॥

दक्षिण लक्षण — दोहा ।

बहु नारिन को रसिक पै सब पै प्रीति समान ।
बचनक्रिया मैं अति चतुर दच्छिनलच्छन जान ॥

यथा सवैया ।

सीलभरी अँखियान समान चितै सब की दुचिताइ को घायक । दास जू भूषन बास कियो सबही के मनोरथ पूजिबे लायक ॥ एकहिं भाँति सदा सब सों रतिरङ्ग अनङ्गकला सुखदायक । मैं बलि द्वारिकानाथ की जो इन सोरह सै नवलान को नायक ॥ १७ ॥

दक्षिण उपपति यथा ।

आज बने तुलसीबन में रमि रास मनोहर नन्दकिसोर । चारिहु पास हैं गोपबधू भनि दास हिये मैं हुलास न थोर ॥ कौल उरोजवतीन को आनन मोहन नैन भ्रमै जिमि भोर । मोहन

आननचन्द लखै बनितान के लोचन चाह च-
कोर ॥ १८ ॥

बचनचतुर यथा ।

भौन अँधेरेहु चाहि अँधेरे चमेली के कुञ्ज
के पुञ्ज बने हैं । बोलत मोर करै पिक सोर
जहाँ तहँ गुञ्जत भौंर घने हैं ॥ दास रच्यो अ-
पनेही बिलासको मैन जू हाथन सो अपने हैं ।
कूल कलिन्दजा के सुखमूल लतान के बृन्द बि-
तान तने हैं ॥ १९ ॥

क्रियाचतुर यथा ।

जित न्हानथली निज राधे करी तित कान्ह
किया अपनो खरको । जित पूजा करै नित
गौरि की वै तित जाय ये ध्यान धरैं हर को ॥
द्रुमि भेद न दास जू जानै कछू ब्रज ऐसो बसै
बुधि की बर को । दधिबेचन जैबो जितै उनको
एई गाहक हैं तितके घर को ॥ २० ॥

सठ लक्षण—दोहा ।

निज मुख चतुराई करै सठता बिरचै आह ।
व्यभिचारी कपटी महा नायक सठ पहचान॥२१॥

सठ पति यथा—सवैया।

वा दिन की करनी उनकी सब भाँतिन कै ब्रज में रही छाय कै। दास जू कासों कहा कहिये रहिये नित लाजन सीस नवाय कै॥ मेरे चलावतहीं चरचा मुकरै सखि सौंहैं बड़ेन की खाय कै। तू निज ओर सों नन्दकिशोर सों क्यों न कछू कहती समुझाय कै॥ २२॥

सठ उपपति यथा।

मिलिबे को करार करौ हम सों मिलि औरन सों नित आवत हौ। इन बातन हौंहीं गई करती तुम दास जू धोखौ न लावत हौ॥ नटनागर हौ जू सही सबही अँगुरी कै इसारे नचावत हौ। पै दई हमहूं बिधि थोरी घनी बुधि काहें को बातें बनावत हौ॥ २३॥

धृष्ट लक्षण—दोहा।

लाजरु गारी मार की छोड़ दई सब त्रास।
देख्यो दोष न मानई नायक धृष्ट प्रकास॥२४॥

पति धृष्ट यथा—सवैया।

उपरैनी धरे सिर भावती की प्रति रोम प-

सीनन यों निकसै । मुसुकात इतै पर दास सबै गुरुलोगनि कै ढिग ह्वै निकसै ॥ गुनहीन हरा उर में उपस्यो तिहि बीच नखच्छत ह्वै निकसै । ग्रह आवत हैं ब्रजराज अली तन लाज को लेस न ध्वै निकसै ॥ २५ ॥

उपपति धृष्ट यथा ।

यह रीति न जानी हुती तब जानी जू आज लौं प्रीति गई निबही । नहि जायगी मोसों सही उतही करो जाय कै ऐसी ढिठाई सही ॥ पहि-चान्यो भले बिधि दास तुमैं अबला-जन की अब लाज नहीं । मनभावही की न करी डर जो मनभाई की दौर कै बाँह गही ॥ २६ ॥

इति नायक ।

अथ नायिकलक्षण—दोहा ।

पहिले आतम धर्म्म तें त्रिबिधि नायिका जानि ।
साधारन बनिता अपर सुकिया परकीयानि ॥

साधारण नायिका लक्षण ।

जामै स्वकिया परकिया रीति न जानी जाय ।
सो साधारण नायिका बरनत सब कविराय ॥

जुवा सुन्दरी गुनभरी तीन नायिका लेखि ।
सोभा कान्ति सुदीप्तियुत नखसिख प्रभा विसेखि॥

सोभा यथा—कवित्त ।

दास आसपास आली ढारती चँवर भावै लोभी ह्वै भवँर अरविन्द से बदन मैं । केती सहवासिनी सुवासिनी खवासिनीहू नैन जोहैं बैठी बड़ी आपने हदन मैं ॥ सची सुन्दरी है रतिरंभा औ घृताची पै न ऐसी रुचिराची कहूं काहू के कदन मैं । पूरी चितचायनि गोविन्द सुखदाइनि श्रीराधा ठकुराइन विराजति सदन मै ॥

कान्ति—यथा ।

पहिरत रावरे धरत यह लाल सारी जोति जरतारीहू से अधिक सोहाई है । नाक मोती निन्दत पदमराग रंगनि को खुलित ललित मिलि अधर ललाई है ॥ औरे दास भूषन सजत निज सोभा हित भामिनी तू भूषननि सोभा सरसाई है । लागत विमल गात रूपन के आभरन बढ़ि जात रूप जातरूप तें सवाई है ॥

दीप्ति वर्णन।

आरसी को आंगन सोहायो छबि छायो न-हरनि में भरायो जल उज्जल सुमन-माल। चां-दनो बिचित्र लखि चांदनी बिछौना पर दूरि कै चँदोअन को बिलसै अकेलो लाल॥ दास आसपास बहु भाँतिन बिराजैं धरे पन्ना पोख-राज मोती मानिक पदिक लाल। चंद प्रति-बिम्ब ते न न्यारो होत मुख औ न तारे प्रतिबिम्ब ते न न्यारो होत नख जाल॥ ३२॥

पग वर्णन।

पाँखुरी पदुम कैसी आँगुरी ललित तैसी कि-रनैं पदुमराग-निन्दक नखन में। तरवा मनो-हर सी एड़ी मृदु कोहर सी सोहर ललाई को न लैहै लालगन में॥ अतन ते आंक रखि अतन बरषि देत भानु कैसो भाव देख्यो तेरे चरनन में। आंक रखि लीन्हो है सोहाग सब सौतिन को दीनो है बरषि अनुराग पिय मन में॥३३॥

जानु वर्णन।

करभ बतावै ते करभही की सोभा हित

गजसुंड गावै तो गजन की बड़ाई को । ऐरी प्रानप्यारी तेरे जानु के सुजान विधि ओप दीनो आपनो तमाम सुघराई को ॥ दास कहै रंभा सुरनायक-सदनवारी नेकहू न तुली एको अंग की निकाई को । रंभा बाग कोने की जौ वाके ढिग सोने की ह्वै सीस भारि आवै तौ न पावै समताई को ॥ ३४ ॥

नितम्ब वर्णन ।

तो तन मनोजही की फौज है सरोजमुखी हाव भाव सायकै रहे हैं सरसाय कै । तापर सलोनो तेरे बस हैं गोविन्द प्यारो मैनहू के बस भयो तेरे ढिग जाय कै ॥ तिनहू गोविन्द लै सुदरसन चक्र एकै कीन्हों बस भुवन चतुर्दस अनाय कै । काहे ना जगत जीतिवे को मन राखै मन दुर्लभ दरस है नितम्ब चक्र पाय कै ॥३५॥

कटि वर्णन ।

सिंहिनी औ मृगिनी की ता ढिग जिकिर कहा वारहू मुरारिहु तें खीनी चित धरि तू ।

दूरही तैं नैसुक नजर-भार पावतहीं लचकि ल-
चकि जात जी मे ज्ञान करि तू॥ तेरो परिमान
परमान के प्रमान है पै दास कहै गरुआई आ-
पनी सँभरि तू। तूतौ मनु है रे वह निपटही तनु
है रे लंक पर दौरत कलंक सो तौ डरि तू॥३६॥

उदर वर्णन।

कैसौ करिये अति अद्भुत निकाई भरी छामो-
दरी पातरी उदर तेरो पान सो। सकल सुदेस
अंग बिहरि थकित ह्वै कै कीवे को मिलान मेरे
मन के मकान सो॥ उरज सुमेरु आगे टबली
बिमल सीढ़ी सोभा सरनाभि सुभ तीरथ समान
सो। हारन की भांति आवा-गौन की बंधी है
पांति मुकुत सुमनवृन्द करत जहान सो॥७३॥

रोमावली वर्णन—सवैया।

बैठी मलीन अली अवली कि सरोज कलीन
सो ह्वै बिफली है। संभु लगी बिकुरीहो चली
किधौं नागलली अनुराग-रली है॥ तेरी अली
यह रोमावली कै सिँगारलता फलवेलि फली

है । नाभिथली तें जुरे फल लै कि भली रस-
राज नली उछली है ॥ ३८ ॥

कुच वर्णन ।

गाढ़े गड़्यो मन मेरो निहारि कै कामिनि
तेरे दोऊ कुच गाढ़े । दास मनोज मनो जग
जीति कै खास खजाने के कुंभ है काढ़े ॥ च-
क्रवती है एकचित मानो मजोम के जीम दुई
उर बाढ़े । गुच्छ के गुम्बज के गिरि के गिरि-
राज के गर्व गिरावत ठाढ़े ॥ ३९ ॥

भुज वर्णन ।

खूब सुहाय खराद चढ़ायसी भावती तेरी
भुजा छबि जाल हैं । सोभा सरोवर तू है सही
तहँ दास कहै ये सकंज मृनाल हैं ॥ कंचन की
लतिका तू बनी दुहुं छाये बिचित्र सपल्लव डाल
हैं । अंग में तेरे अनंग बसै ठग ताहि के पास
की फांसी बिसाल हैं ॥ ४० ॥

कर वर्णन ।

पत्र महारुन एक मिलाय गुलाब कली

तरुनी रँग दीने । पांखुरी पंच को कंज को भानु में बान मनोज के शोणित-भीने ॥ पंच दसानि को दीपक सो कर कामिन को लखि दास प्रबीने। लाल की बेंदुली लालरि की लरिया युत आय निछावरि कीने ॥ ४१ ॥

पीठ वर्णन।

मंगल मूरति कंचनपत्र कै मैनरच्यो मन आवत नीठि है। काटि किधौं कदलीदल गोफ को दीना जमाय निहारि अपींठि है ॥ दास प्रदीप सिखा उलटी कै पतंगमई अवलोकत दीठि है। कांध ते चाकरी पातरी लंक सो सोभित कैधों सलोनी की पीठ है ॥ ४२ ॥

कंठ वर्णन।

कंबु कपोतन की सरि भाषत दास तिन्हैं यह रीति न पाई। या उपमा को यही है यही है यही है बिरंचि त्रिरेख खचाई ॥ कंचन पंचलरा गजमोती हरामनि लाल को माल सोहाई। कै तिय तेरे गरे में परी तिहुंलोक की आनि कै सुन्दरताई ॥ ४३ ॥

ठोढ़ी वर्णन ।

छाक्यो महा मकरन्द मलिन्द रह्यो किधौं मंजुल कंज-किनारे । चंद में राहु को दंत लग्यो कै गिरी मसि भाग सोहाग लिखारे ॥ दास रसीली की ठोढ़ी छबीली की लीलो को बिन्दु पै जाइये वारे । मित्र की दीठि गड़ी किधौं चित्त को चोर गिर्यो छबिताल गडारे ॥

अधर वर्णन — कबित्त ।

एरी पिकबैनी दास पटतर हेरे जब जब तेरे सुंदर अधर मधुरारे को । दाख दुरिजाय मिसिरीऔ मुरिजाय कैसे कंद कुरि जाय सुधा सटक्यो सवारे को ॥ ललित ललाई के समान अनुमाने रंग बिम्बाफल बंधुजीव विद्रुम बिचारे को । तातें इन नामनि को पहिलोई वर्ण कहैं मुख मूँदि मूँदि जात बरननवारे को ॥

दसन वर्णन ।

बिधु सो निकासि नीकी बिधि सो तरासि काला सैकरि सवार्यो बिधि वत्तमो बनाय है । हासही में दास उजराई को प्रकास होत अ-

धर ललाई धरे रहत सुभाय है ॥ हीरा की है-
रानी उड़गन की उड़ानी अरु मुकुतन हूं की
छवि दीनी मुकताय है । प्यारी तेरे दन्तन अ-
नारदाने कहि कहि दाना ह्वै के कवि क्यों
अनारी कहवाय है ॥ ४६ ॥

हास वर्णन ।

दास मुखचन्द्र की सी चन्द्रिका बिमल चारु
चन्द्रमा की चन्द्रिका लगत जामें मैली सी ।
बानी की कपूर धूर ओढ़नी सी फहराति बात
बस आवत कपूर धूर फैली सी ॥ बिज्जु सी च-
मकि महताब सी दमकि उठै उमगति हिय के
हरख की उजेली सी । हांसी हेमबरनी की
फांसी सी लगत ही में सांवरे हगन आगे फूलत
चमेली सी ॥ ४७ ॥

बानी वर्णन सवैया ।

देव मुनीन को चित-रमावन पावन देव-
धुनी-जल जानो । दास सुने जिहि ऊख मयूख
पियूख को भूख भगी पहिचानो ॥ कोकिल को

किल कीर कपोतन को कल बोलनिखंडनी मानो। बाल प्रबीनी की बानी को बानक बानी दियो तजि बीन को बानो ॥ ४८ ॥

कपोल वर्णन कवित्त।

जहां यह श्यामता को अंक है मयंक में तहांई स्वच्छ छबिहि सुछानि बिधि लीन्हो है। तामें मुखजोग सबिसेख बिलगाय अवसेख सों निसिख सर्वाङ्ग रचि दीन्हो है ॥ आनन की चारु-तामें चारुहूं तें चारु चुनि ऊपरही राख्यो बिधि चातुरी सो चीन्हो है। तासों यह अमल अमोल सुभ गोल डोल लोलनैनी कोमल कपोल तेरो कीन्हो है ॥ ४९ ॥

श्रवणवर्णन सवैया।

दास मनोहर आनन बाल को दीपति जा-की दिपै सब दीपै। श्रौन सोहाये बिराजि रहे मुकताहल-संजुत ताहि समीपै ॥ सारी महीन सो लीन बिलोकि बिचारत हैं कबि के अवनी-पै। सोदर जानि ससीहो मिली सुत संग लिये मनो सिन्धु मै सीपै ॥ ५० ॥

नासिका वर्णन कवित्त।

चारु मुखचंद को चढ़ायो बिधि किंसुक के सुकन यो बिम्बाफल लालच उमंग है। नेह उपजावन अतूल तिलफूल कैंधो पानिप सरोवर की उरमी उतंग है॥ दास मनमथ-साहि कंचन सुराही मुख बासजुत पालकी कै पाल सुभ रंग है। एकही में तीनौ पुर ईस को है अंस कैधों नाक नवला को सुरधाम सुर संग है॥ ५१॥

नैन वर्णन सवैया।

कंज सकोचि गड़े रहैं कीच में मीनन बोरि दियो दह नीरनि। दास कहै मृगहूं को उदास कै बास दियो है अरण्य गँभीरनि॥ आपुस में उपमा उपमेय ह्वै नैन ये निन्दत हैं कबि धीरनि। खंजन हूं को उड़ाय दियो हलके करि दीने अनंग के तीरनि॥ ५२॥

भृकुटी वर्णन।

भावती-भौंह के भेदनि दास भले यह भारती मोसो गई कहि। कीन्हो चह्यो निकलंक

मयंक जबै करतार बिचार हिये गहि ॥ मेटत मेटत है धनुषाकृति मेचकताई की रेख गई रहि । फेर न मेटि सक्यो सविता कर राखि लियो अतिही फबिता लहि ॥ ५३ ॥

भ्रूभाव चितवनि वर्णन कवित्त।

जै बिन पनच बिन कर को कसीस बिन चलत इमारे यह जिनको प्रमान है। आखिन अड़त आय उर में गड़त धाय परत न देखे पीर करत अमान है ॥ बंक अवलोकनि को बान औरई बिधान कज्जलकलित जामें जहर समान है। तातें बरबस बेधै मेरे चित चंचल को भामिनी ये भौंहैं कैसी कहर कमान है ॥५४॥

भाल वर्णन सवैया।

बैठक है मन-भूप को न्यारो कि प्यारो अखारो मनोज बली को । सोभन की रँगभूमि सुभाव बनाव बन्यो कि सोहागथली को ॥ दास बिसेख कै तंत्रिका यंत्र को जातें भयो बस भाइ हली को। भाग लसै हिमभानु को चारु लिलार किधौं वृषभानलली को ॥ ५५ ॥

मुखमंडन वर्णन कवित्त ।

आवै जित पानिप समूह सरसात नित मानै जलजात सुतौ न्यायही कुमति होइ । दास जा दरप को दरप कंदरप को है दरपन सम ठानै कैसे बात सति होइ ॥ और अबलानन में राधिका को आनन बरोबरी को बल कहै कबि कूर अति होइ । पैये निस बासर कलं-कित न संक ताहि बरनै मयंक कबिताई को अपति होइ ॥ ५६ ॥

मांग वर्णन सवैया ।

चीकनी चारु सनेहसनी चिलकै दुति मेचकताई अपार सो । जीति लयो मखतूल के तार तमोतम तार दुरेफ कुमार सो ॥ पाटी दुहूं बिच मांग की लाली बिराजि रही यों प्रभा बि-सतार सो । मानो सिंगार की पाटी मनोभव सींचत है अनुराग की धार सों ॥ ५७ ॥

केस वर्णन कवित्त ।

घनस्याम मनभाये मोर के पखा सोहाये रस बरसाये घन-सोभा उमहत है । मन अरु-

झाये मखतूल तार जानियत मोह उपजाये अहिछौने से कहत है॥ दास यातें केस के सरिस हैं मलिन्दबृन्द मुख अरविन्द पर परेई रहत है। याही याही बिधि उपमान ये भये हैं जब और कहा श्यामता है समता लहत है॥

बेनी बर्णन।

वह मोच्छदेनी पातकिन को खिनक बीच साधु-मन बाधे यह कौन धौं बड़ाई है। मरे मरे लोगनि अमर करै वह यह जीवत को मार करै गुन की कसाई है॥ सिरतें चरन लौं मैं नीकै कै निहाख्यो दास बेनी कै त्रिवारा यामे एक ना लखाई है। बिसकी सवारी भयकारी कारी सांपिन सी एरी पिकबैनी यह बेनी क्यों कहाई है॥ ५८॥

अलक पै अलिबृन्द भाल पै अरधचंद भूपै धनु नैनन पै वारौं कंजदल मैं। नासा कीर मुकुर कपोलबिम्ब अधरन दाख्यो वाख्यो दसिनि ठोढ़ी अम्बफल मैं॥ कंबु कंठ भुजन मृनाल

दास कुच कोक छवि की तरंग वारों औैर नाभि-
थल मैं। अचल नितम्बन पै जंघन कदलिखंभ
बाल पगतल वारों लाल मखमल मैं ॥ ६० ॥

संपूर्ण मूर्ति वर्णन सवैया।

दास लला नवलाछबि देखि के मो मति
है उपमान-तलासी। चंपकमाल सी हेमलता
सी कि होय जवाहिर की लवलासी ॥ दीपसिखा
सी मसालप्रभा सी कहौं चपला सी की चंद
कला सी। जोति सो चित्र की पूतरी काढ़ी कि
ठाढ़ी मनोजहि कि अबाला सी ॥ ६१ ॥

इति साधारण नायिका।

स्वकीया लक्षण दोहा।

कुलजाता कुलभामिनी स्वकिया लच्छन चारु।
पतिब्रता उद्दारि जो माधुर्जालंकारु ॥ ६२ ॥
श्री भामिन के भौन जो भोगभामिनी और।
तिनहूं को स्वकियाहु मै गनैं सुकवि सिरमौर ॥

पतिब्रता यथा सवैया।

पान औ खान तें पी को सुखी लखै आप

तबै कछू पीवति खाति है। दास जू केलि थलो-
हि में ढीठो बिलोकति बोलति औ मुसकाति
है॥ सूने न खोलति बेनी सुनैनी व्रती ह्वै बि-
तावति बासर राति है। आली वो जानै न ये
बतियां यों तिया पियप्रेम निबाहति जाति है॥

उदारिज यथा।

हेम को कंकन हीरा को हार छोड़ावती
दै दै सोहाग असीसनि। दास लला को निका-
वरि बोलि जु मागै सुपाय रहै बिस बीसनि॥
द्वार में पीतम जौलों रहै सनमानत देसनि के
अवनीसनि। भीतरो ऐबो सुनाय जनो तबलों
लहि जाती घनो बकसीसनि॥ ६५॥

माधुर्ज यथा।

प्रीतम प्रीति मई उनमानै परोसिन जानै
सुनी तिहि सो ठई। लाज सनो है बड़ो नि-
भनी बर नारिन में सिरताज गनी गई॥ रा-
धिका को ब्रज की जुवती कहैं याहि सोहाग
समूह दई दई। सौति हलाहल सौतिकहै औ
सखी कहै सुंदरि सील सुधामई॥ ६६॥

जेष्ठा कनिष्ठा भेद दोहा ।

इक अनुकूलहि दच्छ सठ धृष्ट तिअनि अँग बाम।
प्यारी जेष्ठा प्यार बिन कहै कनिष्ठा बाम ॥६७॥

साधारण जेष्ठा यथा सवैया ।

प्रफुलित निर्मल दीपतिवंत तू आनन दास निश्यो इक टेक । प्रभा रद होत है सारद कंज कहा कहिये तहँ दास बिवेक ॥ चितै तिय ती-कुच कुंभ के बीच नखच्छत चन्दकला सुभ एक । भये हत सौतिन के मुख सारदी रैन के पूरन चंद अनेक ॥ ६८ ॥

दच्छिण की जेष्ठा कनिष्ठा सवैया ।

दास पिछानि कै दूजी न कोप भले संग सौ-ति के सोइ है प्यारी । देखि करोट सु ऐंचि अतोट जगाये लै ओट गए गिरधारी ॥ पूरन काम कै त्योंही तहांई सो आय कियो फिरि कौतुक भारी । बोलि सु बोल उठाय दुहूं मन रंजि कै गंजिफा खेल बगारी ॥ ६९ ॥

सठ नायक की जेष्ठा कबित्त ।

हौं हूं हुती संग संग अंग अंग रंग रंग भू-

षन बसन आज गोपिन सँवारी री। महल स-
राय में निहारत सबन तन ऊपर अटारी गये
लाल गिरधारी री॥ दास तिहि औसर पठाय
कै सहेली को अकेलियै बुलाई बृषभान की कु-
मारी री। लाल मन बूड़िबे को देवसरि सोती
भई सौतिन चुनौटी भई वाकी सेत सारी री॥

सठ की कनिष्ठा सवैया।

नैनन को तरसैये कहाँ लों कहा लों हियो
बिरहागि में तैये। एक घरी ना कहूं कल पैये
कहां लगि प्रानन को कलपैये॥ आवै यहै अब
दास बिचार सखी चलि सौतिहु के गृह जैये।
मान घटे ते कहा घटिहै जु पै प्रानपियारे को
देखन पैये॥ ७१॥

धृष्ठ की जेष्ठा यथा।

छोड़ि सबै अभिलाख भरोसो वै कैसो करैं
किन साँझ सबेरे। पाइ सोहागिन को तनु
छाड़ि कै भूलि कै मेरे सु आयहै नेरे॥ दीने
दई के लहै सुख-जोग न दास प्रयोग किये बहु

तेरे । कोटि करै नहिं पाइबे को अब तो सखि लाल गरे पस्यो मेरे ॥ ७२ ॥

धृष्ट की कनिष्ठा यथा ।

ऊधो जू मानैं तिहारी कही हम सीखैं सोई जोई श्याम सिखावैं । जातें उनै सुधि जोग की आई दया कै वहै हमहूं को पठावैं ॥ कूबरी कांख जो दाबे फिरैं हमहूं तिनकी समता कहूँ पावैं । पाठ करैं सब जोगही को जु पै काठहु की कुबरी कहूं पावैं ॥ ७३ ॥

ऊढ़ा अनूढ़ा लक्षण दोहा ।

ऊढ़ अनूढ़ा नारि है ऊढ़ा व्याही जानि ।
बिना व्याह सो धर्मरत ताहि अनूढ़ा मानि ॥

यथा सवैया ।

श्री निमि के कुलदासहु की न निमेष कुपंथनि ह्वै समुहाती । तापर मो मति मेरो सुभाव बिचारि यहै निहँचै ठहराती ॥ दास जू भावी स्वयंबर मेरे की बीसबिसै इनके रँग राती । नातरु सांवरो मूरति राम की मो अंखियान में क्यों गड़िजाती ॥ ७५ ॥

इति स्वकीया ।

अथ परकीया दोहा।

दुरै दुरै परपुरुष तें प्रेम करै परकीय।
प्रगल्भता पुनि धीरता भूषन है रमनीय ॥७६॥

यथा सवैया।

आलिन आगे न बात कढ़ै न बढ़ै उठि ओठनि ते मुसुकानि है। रोस सुभाय कटाच्छ के घायन पाय को आहट जात ना जानि है॥ दास न कोऊ कहूं कबहूं कहै कान्ह तें याते कछू पहिचान है। देखि परै दुनियाई में दूजी न तोसी तिया चतुराई की खानि है॥ ७७॥

प्रगल्भता लच्छण दोहा।

निधरक प्रेम प्रगल्भता जौंलौं जानि न जाइ।
जानि गए धीरत्व है बोलै लाज बिहाइ ॥७८॥

यथा सवैया।

लखि पौर में दास जू प्यारो खरो तिय रोम पसीननि च्वै चलती। मिसकै गृहलोगन सो सुघरी सुघरीही घरी ढिग ह्वै चलती॥ जग नैन बचाय मिलाय कै नैननि नेह के बीजन ब्वै च-

लती । अपनो तनछांह सों तुंगतनी तनु छैल छबीले को छ्वै चलती ॥ ७९ ॥

धीरल यथा सवैया ।

वा अधरा अनुरागो हिये जिय पागो वहै मुसक्यानि सुचाली । नैनन सूझि परै वहै सूरति बैनन बूझि परै वहै आली ॥ लोग कलंक लगावत लाख लुगाई कियो करैं कोटि कुचाली । क्यौं अपवाद वृथाही सहै री गहै न भुजा भरि क्यौं बनमाली ॥ ८० ॥

ऊढ़ा अनूढा लच्छन दोहा ।

होति अनूढ़ा परकिया बिन ब्याहे परलीन ।
प्रेम अनत ब्याही अनत ऊढ़ा तरुनि प्रवीन ॥

अनूढ़ा यथा सवैया ।

जानति हौं बिधि मीच लिखी हरि वाकी तिहारे बिछोह कै बानन । जौ मिलि देहु दिलासो मिलाप को तौ कछु वाकै परै कल प्रानन ॥ दास जू जाहि घरी तें सुनो निज ब्याह उछाह को चाह की कानन । वाही घरी ते न

धीर धस्यो परै पीरो ह्वै आयो पियारी को आ-
नन ॥ ८२ ॥

ऊढ़ा यथा सवैया ।

इहि आननचंद्र मयूखन सों अँखिआन की
भूख बुझैबो करौ । तन स्याम सरोरुह दास सदा
सुखदानि भुजानि भरैबो करौ ॥ डर दास न
सास जेठानिन को किन गांव चवाव चलैबो
करौ । मनमोहन जौ तुम एक घरी इन भांतिन
सो मिलि जैबो करौ ॥ ८३ ॥

उद्बुद्धा लच्छन दोहा ।

उद्बुद्धा उद्बोधिता द्वै परकिया बिसेखि ।
निज रीझै सुपुरुष निरखि उद्बुद्धा सो लेखि ॥
अनूढ़ानि को चित्त जो निबसै निहचल प्रीति ।
तौ स्वकियन की गति लहै सकुंतला की रीति॥
प्रथम होइ अनुरागिनी प्रेम असक्ता फेरि ।
उद्बुद्धा तेहि कहत हैं परम प्रेम रस घेरि ॥ ८६॥

अनुरागिनी यथा सवैया ।

पाय परौं जगरानी भवानी तिहारी सुनी

महिमा बहुतेरी । कीजै प्रसाद परै जिहि कैसहूं नंदकुमार तें भाँवरी मेरी ॥ है यह दास बड़ो अभिलाष पुरै न सकौं तो कहौं इकबेरी । चेरी करो तो करो न करो मुहि नंदकुमार कि चेरी की चेरी ॥ ८७ ॥

धीरत्व यथा सवैया ।

होइ उज्यारो गँवारो न होइ जु प्यारो लगै तुम ताहि निहारो । दीने न नैन तिहारे से मेरहू कीजे कहा करता सों न चारो ॥ आय कही तुम कान में बात न कौनहु काम को कान्हर कारो । मोहि तो वा मुख देखे बिना रबिहूं को प्रकास लगे अँधियारो ॥ ८८ ॥

प्रेमाशक्ता यथा सवैया ।

दास जू लोचन पोच हमारे न सोच सकोच बिधाननि चाहैं । कूर कहै कुलटा कहै कोऊ न केहूं कहूं कुलसाननि चाहैं ॥ तातें सनेह में बूड़ि रहीं इतनेही में जानौ जो जानन चाहैं । आनन दै कहैं आड़ गोपाल को आनन चाहिबो आन न चाहैं ॥ ८९ ॥
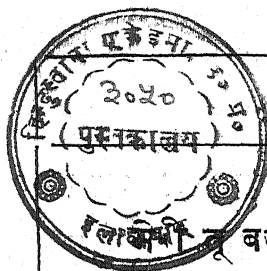
उद्बुद्धा यथा कवित्त ।

[illegible] तू बड़ारिनि बड़ीयै हितकारिनि हौं कैसे कहौं मेरे कहै मोहन पै जावै तू । नैन की लगनि दिन रैन की दगनि यह प्रेम की पगनि चितलगनि सुनावै तू ॥ यहऊ ढिठाई जौ कहौं कि मोहि लै चलु री कान्हही को दास मेरे भौन लगि ल्यावै तू ॥ यथोचित देखि चित देखि दूत देखि चित देहि तित आली जित मेरा हित पावै तू ॥ ९० ॥

उदबोधिता लच्छन दोहा ।

जा छबि लखि नायक कोऊ लावै दूतीघात ।
उद्बोधिता सो परकिया वह असाध्य कहि जात ॥

भेद ।

प्रथम असाध्या सी रहै दुखसाध्या पुनि होय ।
साध्य भए पर आपही उद्बोधिता सु होय ॥

असाध्या अनूढ़ा यथा कवित्त ।

भौन तें कढ़त भाभी भोंड़ी भोंड़ी बातैं कहै लौंड़ी ह्व कनौड़ी छोड़ै घोढ़ीही के जात

लों । चौकी बँधी भीतर लोगाइन की जाम जाम बाहिर अथाइन उठति अधरात लों ॥ दास घैरु बसी घैरुहाइन की डर हियो चलदल पात लों है तोसों बतलात लों । मिलन उपाइन की ढूढ़िबो कहा है आली हौं तो तजि दीनो हरि दरसन घात लों ॥ ९३ ॥

असाध्या जढ़ा यथा ।

देवर की त्रासन कलेवर कँपत है न सासु डर आसिनि उसास लै सकति हौं । बाहिर के घर के परोस नरनारिन के नैनन में कांटे सी सदाही कसकति हौं ॥ दास नहि जानो हौं बिगारो कहा सबही को याही पीर बीर नित पेट पकरति हौं ॥ मोहि मनमोहन मिलाय दूत देती तुम मैं तो वह ओर अवलोकति जकति हौं ॥ ९४ ॥

दुख साध्या लच्छन दोहा ।

साध्यकरै पिय दूतिका विविध भांति समुझाइ ।
दुख साध्या ताको कहैं परकीयन में पाइ ॥

यथा कबित्त ।

भूख प्यास भागी बिदा माँगी लोकचास
मुख तेरी जक लागी अंग सीरेक कुवै जरै ।
दास जिहि लागि कोज एतो तलफत वा कसा-
इन सो कैसे दई धीरज धरो परै ॥ जीतौ जौ
चहै तो वेग रीतौ घरौ लै चलु नहीं तौ सही
तो सिर अजस वै परै मरै । तू तौ घरवसी घर
आई घरो भरि हरि घाटही में तेरे नैन घायन
घरी भरै ॥ ८६ ॥

अब तौ बिहारी के वे बानक गये री तेरी
तनदुति केसरि को नैन कसमीर भो । श्रोन
तुव बानीस्वातिबुंदनि को चातिक भो स्वा-
सनि को भरिबो दुपद्दजा को चीर भो ॥ हिय
को हरख मरु-धरनि को नीर भो री जियरो
मदन तीरगन को तुनीर भो । एरी बेगि करिकै
मिलाप थिर थाप न तो आप अब चाहत अ-
तन को सरीर भो ॥ ८७ ॥

उद्वोधिता साध्या – सवैया ।

नायक हौ सब लायक हौ जु करौ सो सबै तुमकों पचि जाहीं । दास हमै तो उसास लिये उपहांस करैं सब या ब्रज माहीं ॥ आय परैगी कहूं ते कोऊ तिय गैल में छैल गहौ जिन बाहीं । हैहौ दिना की तिहारो है चाह गई करि जाहु निबाहिहौ नाहीं ॥ ९८ ॥

परकीया भेद लच्चण—दोहा ।

परकीया के भेद पुनि चारि बिचारो जांहिं ।
होत बिदग्धा लच्छिता मुदिता अनुसयनाहि ॥

बिदग्धा लच्चन दोहा ।

द्विबिध बिदग्धा कहत हैं कीने कविन बिवेक ।
बचनबिदग्धा एक है क्रियाविदग्धा एक॥१००॥

बचनबिदग्धा यथा सवैया ।

नीर के कारण आई अकेलिये भीर परे सँग कौन को लीजै । ह्यांऊँ न कोउ गयो दिव-सोऊ अकेलि उठाये घरो पट भीजै ॥ दास इतै गउआन को ल्याय भलो जल छांहँ को प्याइ-

ये पीजै । एतौ निहोरो हमारो हरी घट ऊपर नेकु घरो धरि दीजै ॥ १०१ ॥

क्रियाविदग्धा यथा सवैया ।

कसिबे मिस नीबिन के छिन तौ अँग अंगनि दास दिखाय रही । अपनेही भुजान उरोजन को गहि जानु सो जानु मिलाय रही ॥ लल-चौहैं हँसौंहैं लजौंहैं चितै हित सौं चित चाय बढ़ाय रही । कनखा करिकै पग सौं परिकै पुनि सूने निकेत में जाय रही ॥ १०२ ॥

गुप्ता लच्छन दोहा ।

जब तिय सुरति छपावही करि विदग्धता बाम।
भूत भविष ब्रतमान सो गुप्ता ताको नाम ॥

भूत गुप्ता यथा सवैया ।

पठावत धेनु दुहावन मोहि न जाहुं तो देवि करो तुम तेहु। छुड़ाय गयो बछरा यह बैरि मरू करि हौं गहि ल्याई हौं गेहु ॥ गई थकि दौरत दौरत दास बरोट लगे भई बिह्वल देहु। चुरी भई चूरि भरी भई धूरि परी। ढुरि मुक्त हरो यह लेहु ॥ १०४ ॥

भविष्य गुप्ता सवैया।

दै हौं सकौं सिर तो कहे भाभी पै ऊख को खेत न देखन जैहौं। जैहों तो जीव डरावन देखिहौं बीचहि खेत के जाय छपैहौं॥ पैहों छरोर जो पातन को फटिहैं पट क्योंहू तो हौं न डरैहौं। रैहौं न मौन जो गेह के रोस करैंगे सुदोस मैं तेरोई दैहौं॥ १०५॥

वर्तमान गुप्ता सवैया।

अबही की है बात हौं न्हात हुती अचका गहिरे पग जात भयो। मोहि ग्राह अथाह को लैही चल्यो मनमोहन दूरिहि तें चितयो॥ द्रुत दौरि कै पौरि कै दास बरोरि कै छोरि कै मोहि बचाय लयो। इन्हैं भेटती भेटिहौं तोहिँ अली भयो आज तो मो अवतार नयो॥ १०६॥

लच्छिता लच्छन दोहा।

लच्छितासु जाको सुरति हेत प्रगट ह्वै जात।
सखी व्यंग्य बोलै कहै निज धीरज धरिबात॥

सुरति लच्छन यथा सवैया।

सावक बैनो भुअंगन कैं कुच के चहुं पासन

है खुलि नाचे । ओठ पकै कुंदुरू सुक नाक पै काहे न देखिये चोट सो बांचे ॥ आज अली मुकुराभ कपोलनि कैसो भयो मुरचो जिहि माचे । दै यह चंद उरोजन दास जू कौन किये ससिसेखर सांचे ॥ १०८ ॥

हेतु लच्छन यथा सवैया ।

नैन नचौहैं हसौंहैं कपोल अनंद सों अंग न अंग अमात है । दास जू सैदन-सोभ जगी पुरै प्रेम पगी सो ठगी ठहरात है ॥ मोहिं भुलावै अटारी चढ़ी कहि कारीघटा बकपांति सोहात है । कारी घटा बकपांति सखी यहि भांति भए कहि कौन को गात है ॥ १०९ ॥

धीरत्व यथा सवैया ।

सब सूझै जो तोहि तौ बूझै कहा बिन का· जहि पीछे रही परि है । जिहि काम को कैवर कारो लगै सो दुचारि की दासजू क्यों डरिहै ॥ हरिबेनी गुही हरि एड़ी छुही नखदंत को दाग दियो हरि है । कहतो किन जाय जहां कहिबे कोऊ कोह कै मेरो कहा करिहै ॥ ११० ॥

मुदिता लच्छन दोहा ।

वहै बात बनि आवई जो चितचाहत होइ ।
तातें आनन्दित महा मुदिता कहिये सोइ ॥

यथा सवैया ।

भोरही आनि जनी सो निहोरि कै राधे कह्यो मोहिँ माधो मिलावै । ता हित कारने भौन गई वह आप कछू करिबे को उपावै ॥ दास तहीं चलि माधो गये दुख राधेबियोग को ताहि सुनावै । पाय कै सूनौ निलै मिलै दूनौ बढ्यो सुख दूनो दुहूँ उर लावैं ॥ ११२ ॥

अनुसयना लच्छण दोहा ।

केलिस्थानबिनासिता भावस्थान-अभाव ।
अरु संकेतनिप्राप्यता अनुसयना त्रै नाव ॥

केलिस्थानबिनासिता यथा—सवैया ।

दास जू वाकी तो द्वार की सूनी कुटी जरै यातें करै दुख थोरै । भारी दुखारी अटारी चढ़ी यहै रोवै हनै छतिया सिर फोरै ॥ हाइ भरै कहै लोगन देखि अरै निरदै कोऊ पानी लै दौरै । आग लगी लखि मालिनी के लगी आग है ग्वालिन के उर औरै ॥ ११४ ॥

भावस्थान अभाव यथा ।

आजलौं तौ उत दूसरो प्रानी कोऊ ना हुतो वह बावरो बौनो । आवति जाति अबार सवार बिहार समै न हुतो डर कौनो ॥ दास बनै अब क्यों पिय भेंट सहेट के जोग न दूसरो भौनो। बैठि बिचारै यों बाल मनैमन बावन को सुनि आवन गौनो ॥ ११५ ॥

संकेत निःप्राप्यता यथा ।

समीप निकुंजन कुंजबिहारी गये लखि साँझ पगे रसरंग । इतै बहु द्योस में आय कै धाय नवेली को बैठि लगाइ उछंग ॥ उड़ीं तहँ दास बसी चिरियां उड़िगो तिय के चित वाही के संग । बिछोह तें बुन्द गिरे अँसुआ के सु वाके गुने गए प्रेम-उमंग ॥ ११६ ॥

बिभेद लक्षण – दोहा ।

मुदिता अनुसयनाहुँ में बिदग्धाहु मिलि जाय।
सबल भाव इहि भाँति बहु बरनत हैं कबिराय॥

मुदिता बिदग्धा यथा – सवैया ।

आवत सोमवती सब संगही गंगनहान

कियो चहती हैं। गेह को भार जसोमति बार को आजहि सौंपि दियो चहती हैं॥ मोहिँ अकेली यहां तजि दास जू जीवन लाहु लियो चहती हैं। आली कहा कहौं या घर की सिगरी मोहिँ खाय जियो चहती हैं॥ ११८॥

अनुसयना विदग्धा यथा।

चारि चुरैल बसैं यहि भौन कियो तिन चेरो सो चौधरी दानो। केते बिदेसी बसाय बसाय तिनै सनमानत से कुल ध्यानो॥ दास दयाल जो होती कोऊ तो भगावती याहि सिखाय सयानो। हाय फस्यो केहि हेत कहां तें धौं आय बस्यो यह बावरो बानो॥ ११९॥

दूजी अनुसयना विदग्धा यथा—कबित्त।

न्यारे * के सदन तें उड़ाई गुड़ी प्रानप्यारे संज्ञा जानि प्यारी मन उठी अकुलाय कै। पावति न घात जात देख्यो सुखव्योत बीतो रीतो कियो घरो तब नीर ढरकाय कै॥ घर की रि-

* इनारे अर्थात् कूंआवाले घर से।

सानी कहा कीनी तू अयानी तब तासों कै स-
यानी या कहत अनखाय कै । काहे को कुबा-
तनि सुनावति हौ मेरो बीर ढरिगो तो हौंहो
भरि ल्यावति हौं जाय कै ॥ १२० ॥

इति परकीया ।

अथ मुग्धादि भेद – दोहा ।

त्रिबिधि जु बरनी नायिका तेऊ त्रिबिधि बिसेखि।
मुग्धा मध्या कहत पुनि प्रौढ़ा ग्रन्थन देखि ॥
जोबन के आगमन तें पूरनता लौं मित्त ।
पञ्चभेद ह्वै जात हैं तै मुग्धादिक चित्त ॥१२२॥

मुग्धादि लक्षण ।

सैसव जोबन सन्धि जिहि सो मुग्धा अवदात ।
बिन जाने अज्ञात है जाने जानो ज्ञात ॥१२३॥

साधारण मुग्धा यथा – सवैया ।

बालकता मे युवा झलकी दल बोझल ज्यों
जुगुनू के उजेरे । लङ्क लचोहैं नितम्ब उचोहैं
नचोहैं से लोचन दास निबेरे ॥ जानिबे जोग

सुज्ञानन के उर जात थली उरजातन घेरे । स्यामता बीच दै अङ्ग के रङ्ग अनङ्ग सुढार प्रकार सो फेरे ॥ १२४ ॥

स्वकीया मुग्धा यथा—कवित्त ।

घटती द्रुकङ्क होन लागी लङ्क बासर की केस सम बंस को मनोरथ फलीन भो। बढ़ि चले कानन लौं नीके नैन खंजन औ बैठि रहिबे को जनु सैसव अलीन भो ॥ साँझ तरुनापन बिकास निरखत दास आनँद लला के नैनकैरव कलीन भो । दुलही बदनइन्दु उलही अनूप दुति सौति मुख-अरबिन्द अतिही मलीन भो ॥ १२५ ॥

परकीया मुग्धा—यथा सवैया ।

उकसौहैं भए उर मध्य कुटौहैं सी चंचलता अँखियान लगी । अंखिया बढ़ि कान लगी अरु कानन कान्ह कहानी सोहान लगीं ॥ बिन काजहू काज हू दास लखो जसुदा गृह आवन जान लगी । ललिताहु सों नेक बतान लगी रसबात सुने सकुचान लगी ॥ १२६ ॥

अज्ञात यौवना साधारण - यथा सवैया ।

मुहिं सोच निजोदर रेख लखे उर में व्रण वेष सी होन चहै। गति भारी भई विधि कीवो कहा कसि बाँधतहूं कटि-नीवी ढहै ॥ कहा भौंहनि भाव दिखावै भटू कहिवे कछू होय सो खोलि कहै । पट मेरो चलै विचलै तो अली तू कहा रद आँगुरी दावि कहै ॥ १२७ ॥

अज्ञातयौवना स्वकीया ।

सखि तैहूं हुती निसि देखतही जिन पै वै भई हीं निछावरियां । तिन पानि गह्यो हुतो मेरो तबै सब गाय उठीं ब्रज गाँवरियां ॥ अँसुवा भरि आवत मेरे अजौं सुमिरे उनको पग पाँवरियां। कहि को हैं हमारे वे कौन लगैं जिनके सँग खेलीहीं भाँवरियां ॥ १२८ ॥

परकीया अज्ञातयौवना ।

द्वार गई तहँ मेह मिल्यो हरि कामरी ओढ़े हुत्यो उत वैसो। आतुर आइ कै अंग छपाइ बचाइ कै मोहिं गयो जस लै सो ॥ दास न ऐसो

लख्यो कबहूं मैं अचम्भो भयो वहि औसर जैसो । सेद बढ़्यो त्यों लग्यो तन कंपन रोम उठ्यो यह कारन कैसो ॥ १२९ ॥

ज्ञातयौवना यथा ।

आनन में मुसकानि सोहावनी बङ्कुरता अँखियान छई है । बैन खिले मुकुले उरजात जकी बिथकी गति ठौन ठई है ॥ दास प्रभा उछलै सब अंग सुरंग सुबासता फैल गई है । चन्दमुखी तन पाय नवीनो भई तरुनाई अनँदमई है ॥

ज्ञातयौवना स्वकीया ।

दास बड़े कुल की बतियां बतियां परबीनी सो जीवन ज्वैहै । बाहिर ह्वैहै न जाहिर और अनाहिर लोग की छाँह न छुवै है ॥ खेलन दै भरि साध सखी पुनि खेलिबे जोग येई दिन द्वै है । फेर तो बालपनो अपनो री हमै लषनो सपनो सम ह्वैहै ॥ १३१ ॥

ज्ञातयौवना परकीया—कवित्त ।

मन्द मन्द गौन सो गयन्दगति खोने लगी

बोने लगी बिष सों अलक अहिछौने सी। लंक नवला की कुच-भारन दुनौने लगी होने लगी तन की चटक चारु सोने सी ॥ तिरछे चितौने सो बिनोदनि बितौने लगी लगी मृदु बातनि सुधारस निचौने सी। मौने मौने सुन्दर सलोने पद दास लोने मुख की चटक ह्वै लगन लगी टोने सी ॥ १३७ ॥

मध्या लक्षण – दोहा।

नवजोबन पूरनवती लाज मनोज समान ।
तासों मध्या नायिका बरनत सुकवि सुजान ॥

साधारण मध्या यथा – सवैया।

है कुचभारनि मन्दगती करै माते गयन्दन को मद भूरो । आननओप अनूप लखि मिटि जात मयङ्क-गुमान समूरो ॥ दास भरी नख तें सिख लाज पै काम को साज बिलोकिये पूरो। काम के रंग मनो रँगि अंग दई दयो लाज को रोगन रूरो ॥ १३८ ॥

स्वकीया मध्या।

नाह के नेह रँगी दुलही दृग नैहर गेह सकोचनि साने। दास जू भीतरही रहै लाल तऊ लखिबे को रहैं ललचाने॥ घ्यो-मुख सामुहैं राखिबे को सखियां अँखियान को ब्योंत बिताने। चन्द निहारि नहीं बिकसै अरबिन्दन को कछु बात न माने॥ १३५॥

परकीया मध्या—कवित्त।

पीन भये उरज निपट कटि छीन भई लीन ह्वै सिँगार सब सीखी सखियान में। दास तनदीपति प्रदीप के उजास कीन्हे बैरिन की नजरि प्रकास पखियान में॥ काम की कलोलन की चरचा सुनत फिरै चन्द्रावलि ललिता को लीन्हे कखियान में। एक ब्रजराज को बदन द्विजराज देखिबे की दून लाज लाजभरी अँखियान में॥

प्रौढ़ा साधारण यथा—कवित्त।

सारी जरकस वारी घाँघरो घनेरो बेस छहरै छबीली केस छोर लों छवान के। पृथुल नि-

तम्ब लङ्क नाम अवलम्ब लोट गेंदुरी पै कुच द्वै कलस कल सान के॥ दास सुखकन्द चन्दबदनी कमलनैनी गति ये गयन्द होनवारे कुरबान के। पी को प्रेममूरति सुरति कैसी सूरति सुबास हाम पूरनि अवास बनितान के॥१३८॥

प्रौढ़ा स्वकीया यथा—सवैया।

केसरिया निज सारी रँगै लखि केसरि-खौरि गोपाल के गातनि। दास चितै चित कुञ्जबिहारी बिछावति सेज नये तरु-पातनि॥ आवत जानि कै आपने भौन मिलै पहिलै लै बिरी अवदातनि। बीतै बिचारतै भावती को दिन भावतो की मनभावति बातनि॥ १३९॥

प्रौढ़ा परकीया यथा।

झूलनि लागी लता मृदु भाइनि फूलनि लागी गुलाबकली अब। दास सवास झकोरन झोरत भौंर की बाय बहाय चली अब॥ जागि कै लोग बिलोकिहै टोकिहै रोकिहै राह सद्दार गली अब। ऐसे में सूने सखी कै निलै चलि सोखी सभाग न बाग भली अब॥ १४०॥

मुग्धादि को संयोग — दोहा ।

अब कहियत तिन तियन के रति संजोग प्रकार ।
होत चेष्टा बचन तें प्रगट जु भाव अपार॥१४१॥
मुग्धा तिय संयोग में कही नवोढ़ा जाहि ।
अबिश्रब्ध बिश्रब्ध है जे न पतिहि पतियाहि ॥

अबिश्रब्धनवोढ़ा — कवित्त ।

सोवती अकेली है नवेली केलिमन्दिर ज-
गाय कै सहेली रस फैली लखै टरि कै । दास
त्योंही आय हरि लीन्ही अङ्क भरि न सँभारि
सकी जागी जऊ सुन्दरि भभरि कै॥ मचलि म-
चलि चल बिचल सिँगारन कै कसमसै एजी एजी
नाहीं नाहीं करिकै । तकै तन झारै झझकारै
करै छूटिबे को उर थरहरै जिमि एनी जाल परि
कै ॥ १४३ ॥

बिश्रब्धनवोढ़ा ।

केलि पहिलीयै दुखतूल दूजी सुखमूल ऐसी
सुनि आलिन सो आई मति ढंग में। बसन ल-
पेटि तन गाढ़ी कै तनीनि तनि सोन-चिरिया

सी बनी सोई पिय संग में॥ तापर पकरि नीबी जंघन जकरि बड़े ढाढ़सनि करि दास आवति उछंग मै। छुै छुै अधरामृत निहाल होत लाल अबै आनँद बिसाल पाइबो है रतिरंग मै॥१४४॥

पुनः यथा—सवैया।

हौं तो कह्यो कछु बातें करैगो प्रबीन बड़े बलदेव के भैया। ये गुन जानती तो यह सेजहि भूलि न सोवती बीर दोहैया॥ दास इते पर फेरि बोलावत यों अब आवति मेरी बलैया। आवती हौं जो कहो करि सौंहैं कि आज करैंगे न काल्हि की नैया॥ १४५॥

मुग्धा की सुरति।

काम कहै करि केलि ढिठाई सों लाज कहै यह क्यौंहूं न होनो। लाज की ओर तें लोचन ऐंचत काम की ओर तें प्रेम सलोनो॥ दास बस्यो मन बाम के काम पै लाज तज्यो निज धर्म न कोनो। यों गृहकाम कस्यो करै प्यारी पै लाज औ काम लरौ करैं दोनो॥ १४६॥

झाँझरिया झनकैंगीं खरी खनकैंगीं चुरी तनकौ तन तोरे। दास जू जागतीं पास अली-गन हांस करैंगीं सबै उठि भोरे॥ सौंह तिहारी हौं भागि न जाँउगी आई हौं लाल तिहारेई धोरे। केलि की रैन परी है घरीक गई करि जाहु दई के निहोरे॥ १४७॥

प्रौढ़ा सुरति सवैया।

दास जू रास कै ग्वालि गई सब राधिका सोइ रही रँग भू मैं। गाढ़े उरोजन दै उर बीच सुजानु को ऐंचि भुजान दुहू मैं॥ भोर भयो पिय सैन को सोनो न गेह को गौनो सकै करि दूमैं। भीर बड़ीयै परै जिमि सोनो बनै न भँजावत राखत सूमैं॥ १४८॥

पुनः सवैया।

दीपकजोति मलीनी भई मनिभूषन जोति की आतुरिया है। दास न कौल-कली बिकसी निज मेरी गई मिलि आँगुरिया है॥ सीरी लगै मुकतावलि तेऊ कपूर की धूरिन सो पुरिया

है । पौढ़े रहो पट ओढ़े दूती निसि बोलै नहीं चिरिया चुरियाँ है ॥ १४९ ॥

इति वहि:क्रम भेद ।

अथ अवस्था भेद दोहा ।

हेत सँजोग बियोग की अष्ट नायका लेखि ।
तिनके भेद अनेक मैं कछु कछु कहौं बिसेखि ॥

संयोग शृगार की नायका भेद ।

तियसँजोग शृङ्गार की कारन तीनो जानि ।
स्वाधिनपतिका अपर है बासकसज्जा मानि ॥
अभिसारिका अनेक पुनि बरनत हैं कबिराव ।
स्वकिया परकीयान मिलि होत अनेकन भाव ॥

स्वाधीनपतिका लच्छन दोहा ।

स्वाधिनपतिका है वहै जाके बस है पीउ ।
होय गर्बिता रूप गुन प्रेम गर्ब लहि जीउ ॥

स्वकीया स्वाधीनपतिका सवैया ।

माँग सवारत काँगहि लै कचभार भिँगावत अंग समेत हो । रोम उठावत कुंकुम लेय कै दास मिलाय मनो लिये रेत हो ॥ बीरी

खवावत अंजन देत बनावत आड़ काँपो बिन हेत हौ। या सुघराई भरोसे क्यों दौरि कै छोरि सखीन को काजर लेत हौ॥ १५४॥

परकिया स्वाधीनपतिका कवित्त।

कै बा मैं निहारै पिछवारे की गली में अली झांकि कै झरोखे नित करत सलामैं हैं। कै बा भेख भिच्छुक को घोटी बीच आप आय सबद सुनायो दुपहर जज्जलामें हैं॥ दास भनि कै बा भीतरेहूं ह्वै निरास गए पहिरि सुनारिन के ब-सन ललामें हैं। हाय हौं गँवारिन न घात मि-लबे को लहौं मेरे हित कान्ह केती करत क-लामे हैं॥ १५५॥

रूपगर्विता यथा सवैया।

चंद सो आनन मेरो बिचारो तौ चंदही देखि सिराओ हियो जू। बिम्ब सो जौ अधरान ब-खानो तौ बिम्बहि को रस पीओ जिओ जू॥ श्रीफलही क्यों न अंक भरौ जो पै श्रीफल मेरे उरोज कियो जू। दीपति मेरी दिये सो है दास तौ जाऊँ हौं बैठि निहारो दियो जू॥ १५६॥

प्रेमगर्विता सवैया ।

न्हान-समै जब मेरो लखै तब साज लै वैठत आनि अगाऊँ । नायक हौ जू न रावरो लायक यों कहि हौं कितनो समुझाऊं ॥ दास कहा कहों पै निज हाथही देत न हौंहू सवारन पाऊं । मोहि तौ साध महा उरमें जो महाउर नाइन तोसों दिआऊं ॥ १५७ ॥

गुनगर्विता कवित्त ।

औरन अनैसो लगै हौं तो ऐसी चाहती जो बालम के मोसी तिय व्याहि कोऊ आवती । क्यों हूं कछू कारज उठाय लेती मेरो घरी पहर को अली तौ हौं खाली होन पावती ॥ दास मनभावन के मन के रिझावन को चारु चारु चित्रित कै चित्र दरसावती । प्रेमरस धुनि को कवित्त करि ल्यावती कै बीनै लै बजावती कै गीतैं कछु गावती ॥ १५८ ॥

वासकसज्जा लच्छन दोहा ।

आवन्ती जहँ कन्त की निजगृह जानै दार ।
बासकसज्जा तिहि कहत साजै सेज सिँगार ॥

स्वकीया वासकसज्जा यथा कवित्त।

जानि जानि आवै प्यारो प्रीतम बिहार-
भूमि मानि मानि मंगलसिँगारन सिँगारती।
दास दृग कंजन बँदनवार तानि तानि छानि
छानि फूले फूले सेजहिँ सँवारती॥ ध्यानही में
आनि आनि पीको गहि पानि पानि ऐंचि पट
तानि तानि मैनमद भारती। प्रेम गुन गानि
गानि पीउ बनि सानि सानि बानि बानि खा-
नि खानि बैनन बिचारती॥ १६०॥

परकीया वासकसज्जा सवैया।

आवतो आवतो जानि नवेली चमेली कि
कुंज जो बैठती जाय कै। दास प्रसूनन सोन-
जुही करै कंचन सी तनजोति मिलाय कै॥
चौंकि मनोरथही हँसि लेन चलै पग लाल प्रभा
महि छाय कै। बीर करै कर बीर भरैनि वलै
हरषै छबि आपनी पाय कै॥ १६१॥

आगतपतिका वासकसज्जा दोहा।

पियआगम परदेस तें आगतपतिका भाउ।
है वासकसज्जाहि मै वहै बढ़ै चित चाउ॥

यथा सवैया ।

भावती आवत ही सुनि कै उड़ि ऐसी गई हद कामता जौ गुनी । कंचुकौ हूं मैं नहीं मढ़ती बढ़ती कुच की अब तो भई दौ गुनी ॥ दास भई चिकुरारन में चटकीलता चामर चारु तें चौगुनी । नौगुनी नीरज तें मृदुता सुखमा मुख में ससि तें भई सौगुनी ॥ ६३ ॥

अभिसारिका लच्छन दोहा ।

मिलनसाज सब करि मिलै अभिसारिका सुभाय।
पियहिँ बोलावै आपुकै आपुहि पिय पै जाय ॥

स्वकीया अभिसारिका कबित ।

रीझि जग मगे दृग मेरे या सिँगार पर ललित लिलार पर चारु चिकुरारी पर । अमल कपोल पर कमल बदन पर तरल तरौनन की रुचिर रवारी पर ॥ दास पग पग दूनो देहदुति दग दग जग जग ह्वै रही कपूर धूर सारी पर । जैसी छबि मेरे चित चढ़ि आई प्यारी आज तैसिये तू चढ़ि आई बनि कै अटारी पर॥१६५॥

परकीया अभिसारिका सवैया ।

लच्छन धौल अटा लखि नील दियो छिट-काय छटा छबिजालहि । तापर पूरो सुगन्ध अतूल कौ दै गई मालिन फूल की मालहि ॥ छोड़ि दियो मोहि लोगनि भौन दई दियो दास महा सुख-कालहि । आली दरीची की नीची उदीची की बीची निभीचि ह्वै ल्याउरी लालहि ॥

शुक्लाभिसारिका कबित्त ।

सिखनख फूलन के भूषन बिभूषित कै बांधि लीनो बलया बिगत कीनी बजनी । तापर सं-वाख्यो सेत अंबर को डंबर सिधारी स्याम सन्नि-धि निहारी कहूं न जनी ॥ छीर के तरंग की प्रभा को गहि लीन्ही तिय कीन्ही छीर सिन्धु छिति कातिक की रजनी । आनन प्रभा तें तन छांहहू छपाए जाति भौंरन के भीर संग लाये जाति सजनी ॥ १६७ ॥

कृष्णाभिसारिका यथा ।

जलधर ढारैं जलधारन की अंधिकारी निपट अँधारी भारी भादव की जामिनी । तामे स्याम-

बसन बिभूखन पहिर स्यामा स्याम पै सिधारी प्यारी मत्त गजगामिनी ॥ दास पौन लागे उ-परैनी उड़ि उड़ि जाति तापर न क्योंहूं भांति जानी जाति भामिनी । चारु चटकीली छबि चमकि चमकि उठै लोग कहैं दमकि दमकि उठै दामिनी ॥ १६८ ॥

इति संयोग ।

अथ बिरह है तुलच्छन दोहा ।

बिरह हेत उत्कंठिता बहुरि खंडिता मानि ।
कहि कलहंतरितानि पुनि गनै बिप्रलब्धानि ॥
पांचो प्रोषितभर्टका सुनो सकल कबिराय ।
तिनके लच्छन लच्छ अब आछो कहों बनाय ॥

उत्कंठिता लच्छन दोहा ।

प्रेमभरी उत्कण्ठिता जो है प्रीतमपंथ ।
बेर लगे त्यों त्यों बढ़ै मनसूबन के ग्रन्थ॥१७१॥

यथा सवैया ।

जो कहो काहू के रूप सों रीझै तौ और को रूप रिझावनवारो? । जौ कहो काहू के प्रेम

पगी हैं तो और को प्रेम पगावनवारी ? ॥ दास जू दूसरो बात न और इती बड़ी बेर-बितावन-वारी। जानति हौं गई भूलि गोपाल गली यहि ओर की आवनवारी ॥ १७२ ॥

पुनः सवैया।

तनिकौ तिनके खरके खरको तिनके तनको ठहरैबो करै। लखि बोलत मोर तमाल कै डोलत चाय सो चौंकि चितैबो करै॥ यह जानती प्रीतम आंवहिंगे अधरात लौं ज्यों नित ऐबो करै। अँखियाँन कौं दास कहा कहिये बिन कारनही अकुलैबौ करैं ॥ १७३ ॥

पुनः सवैया।

आज अवार बड़ी करी बालम जौ अब कै सखि भेटन पैहौं। कै मनकाम सपूरन तूरन तौ यह बात प्रमान करैहौं॥ आतुर ऐबो करौ जू न तौ मग जोहत होतौ दुखी बहुतै हौं। आपनी ठौर सहेट बदौ तहँ हौंही भले नित भेट कै ऐ हौं ॥ १७४ ॥

खंडिता लच्छन दोहा।

प्रीतम रैनि बिहाय कहुँ जापै आवै प्रात।
सुहै खंडिता मान में कहै करै कछु बात॥

यथा कवित्त।

लोचन सुरंग भाल जावक को रंग मन सुखमा उमंग अरुनोदै अवदात की। भावती को अंगराग लाग्यो है सभाग तन छबि सी छपन लागी महातम गात की॥ दास बिधुरेख सो नखच्छत सुबेख ओठ अंजन की रेख अलिनी सी कंजपात की। प्यारे मोहि दीन्हो आनि दरस प्रभात प्रभा तनमैं लै दरस पीछे कै प्रभात की॥ १७६॥

धीरा यथा।

अंजन अधर भुव चंदन सुबेंदी बाहु सुखमा सिँगार हास करुना अकस की। नख है न अंग राग कुंकुम न लाग्यो तन रौद्र बीर भयवारी झलक रहस की॥ पलन की पीक पर बसन हरा अलीक दास छबि घन अदभुत संत जस

की । पहिले भुलानी अब जानी मैं रसिकराय रावरे के अंगनि निसानी नवरस की ॥१७७॥

अधीरा यथा ।

ज्वाल उपजावन अज्वाल दरसावन सुभाल यह पावक न जावक दिढ़ाये हौ । देखि नख-सिख उठी विष की लहरि महा कहा जो अधर बीच अंजन सो लाये हौ ॥ दास नहिं पीक-लीक व्यालिनि बिसाली ठीक उर मे नखच्छत न खंजर छपाये हौ । मेरे मारिबे को वा बिसा-सिनि पठाई हरि छल की बनाय लिये कितनी उपाये हौ ॥ १७८ ॥

धीराधीरा यथ सवैया ।

भाल को जावक ओठ को अंजन पोंछि के होते गलीपथगामी । ठोढ़ी की गाढ़ नखच्छत मूंदो न दास जू होती यों बेसुधि कामी ॥ कंस कुठाकुर नंद अहीर परोसिनि देत डरै बदनामी । यातें कछू डर लागै न तौ हमै रावरेही सुख सों सुख स्वामी ॥ १७९ ॥

प्रौढ़ा धीरादि भेद लक्षन दोहा।

तिय जु प्रौढ़ अतिप्रेम मैं सो न सकै कहिबात।
ता रिस ताकी क्रियन तें जानें मति अवदात॥

यथा सवैया।

होरी की रैनि बिहाय कहूं उठि भोरहीं भावती आवत जोयो। नेकु न बाल जनाई भई जऊ कोप को बीज गयो हिय बोयो॥ दास जू दै दै गुलाल की मारनि अंकुरिबो उहि बीज को खोयो। भावते भाल को जावक ओठ को अंजनहो को नखच्छत गोयो॥ १८१॥

तिलक।

प्रौढ़ा धीरादि के तीनों भेद याही में हैं।

मानिनी लक्षन दोहा।

पियपराध लखि मान को किये मानिनी नाम।
लघु मध्यम गुरु मान को उदै होत जा काम॥

लघुमान यथा सवैया।

है यह तौ घर आपनोई उत तौ करि आओ मिलाप की घातें। यों दुचिताई मैं प्रेम सनै न बनैगी कछू रस रीति सुहातें॥ दासही

मोहि लगी अबलौं अब लौटि गई मु हौं जानती जातें । नाहकही को कही अंखिया नहीं नाहकही हमसों करी बातें ॥ १८३ ॥

मध्यम मान सवैया ।

तब और की ओर निहारिबे को करो निसाँहि मेरी दोहाइये जू । सुलख्यो हम आपने नैनन सों कहा कीबो करो चतुराइये जू ॥ बतलात हौ लाल जिते तितही अब जाइ सुखै बतलाइये जू । इत जोरो जो रावरी सो न जुरै न जरै पर लोन लगाइये जू ॥ १८४ ॥

गुरुमान यथा सवैया ।

लाल ए लोचन काहे प्रिया हैं दियो छै है मोहन रंग मजीठी । मोतें उठी है जो बैठे अरीन की सीठी क्यों बोलो मिठाइ लौं मीठी ॥ चूक कहो किमि चूकत हो जिन्हैं लागी रहै उपदेस बसीठी । झूठी सबै तुम सांचे लला यह झूठी तुमारेहु पाग की चीठी ॥ १८५ ॥

इति खंडिता ।

अथ कलहंतरिता दोहा ।

कलहन्तरिता मान कै चूक मानि पछताय ।
सहज मनावन को जतन मान सांति ह्वै जाय ॥

यथा सवैया ।

जीवौं तौ देखते पाय परौं अब सौतिहु के महलै किन होई । आज तें मान को नाम न लेउ करौं टहलै सहलै अति जोई ॥ दास जू दै न सकी बिखदै सिखमान कौ बैरिन प्रान लि-योई । एरी सखी कहूं क्यों हू लखौ पिय सों करि मान जियै तिय कोई ॥ १८७ ॥

लघुमान सांति सवैया ।

जानि कै वापै निहारत मेरे गई फिरि बाँकी कमानसी भौंहैं ॥ दास जू डारि गले भुज बाल के लाल करी चतुराई अगौहैं । प्रानप्रिया लखि तौ वा गँवारि के सामुहें व्योम उड़े खग को हैं ॥ बोली हँसौहै जु दीजिये जान किये रहिये मुख मो मुख सौहैं ॥ १८८ ॥

मध्यम मान सांति सवैया ।

बातें करी उनसों घरी चारि लों सो निज

नैननि देखतही हौं। कीजै कहा जो बनावनी बांधि कै दास कियो गुरु लोगन की सौं ॥ बैठो जू बैठो न सोच करो हिय मेरे तो रोम की जात भई दौं । जान्यो मैं मान छोड़ाइवे की तुमै आवतो लाल बड़ोयै बड़ी गौं ॥ १८९ ॥

गुरुमान शांति सवैया ।

जान्यो मैं वा तिल तेल नहीं पहिले जब भामिनी भौंह चढ़ाई। कान्ह जू आज करामत कीन्ही कहां लौं सराहौं महा सुघराई ॥ दास बसो सदा गोपन मैं यह अद्भुत वैदई कौने सिखाई । पाय लिलार लगाय लला तिय नैनन की लियो ऐंचि ललाई ॥ १९० ॥

साधारन मान शांति सवैया ।

आज तें नेह को नातो गयो तुम नेम गहो हौंहू नेम गहौंगी। दासजू भूलि न चाहिये मोहि तुमै अब क्यौंहू न हौंहू चहौंगी ॥ वा दिन मेरे प्रजंक पै सोये हौ हौं वह दाव कहौं पै लहौंगी । मानो बुरो कि भलो मनमोहन सेज तिहारी मैं सोइ रहौंगी ॥ १९१ ॥

विप्रलब्धा लक्षन दोहा ।

मिलन-आस दै पति छली औरहि रत ह्वै जाइ।
विप्रलब्ध सो दुःखिता परसंभोग सुभाइ ॥१९२॥

यथा कबित्त ।

जानि कै सहेट गई कुंजन मिलन तुमैं जान्यो ना सहेट के बदैया ब्रजराज से । सूनो लखि सदन सिँगार ज्यों अँगार भए सुखदैन वारे भए दुखद समाज से ॥ दास सुखकंद मंद सीतल पवन भए तनते सुज्वाल उपजावन दुला-ज से । बाल के बिलापन बियोग तन तापन सो लाज भई मुकुत मुकुत भए लाज से ॥

अन्यसंभोगदुःखिता यथा सवैया ।

ढीली परोसिनि बेनी निहारि कै जानि गई यह नायक गूंदी । औरै बिचार बढ़ो बहुर्यो लखि आपनी भांति की नीवी की फूंदी ॥ दास-पनो अपनो पहिचानत जानो सबै जु हुती कछु मूंदी । ऊभि उसास गही तरुनो बरुनीन में छाय रही जल बूंदी ॥ १९४ ॥

पुनः सवैया।

✓ केलि के भौन में सोवत रौन विलोकि ज-गायबे को भुज काढ़ी॥ सैन में पेखि चूरीन के चूरन तूरन तेह गई गहि गाढ़ी। दास महाउर छाप निहारि महा उर ताप मनोज की बाढ़ी॥ रोसभरी अँखिया नित घूरति मूरति ऐसी बि-सूरति ठाढ़ी॥ १९५॥

पुनः कवित्त।

ल्याई बाटिकाही सों सिंगार हार जानती हौं कंटन को लाग्यो है उरोजन में घाव री। दौरि दौरि टहल कै महल ह्वै कै बादिही बि-गाख्यो उर चंदन दृगंजन बनाव री॥ मेरो कहा दोस दास बात जौन बूझि लीनी अपनीही सू-झि तू तौ भरि आई भाव री। पीतपटवारे को बोलावन पठाई मैं तो पीत पट काहे को रँगाइ ल्याई बावरी॥ १९६॥

प्रोषितभर्तृका दोहा।

कहिये प्रोषित भर्तृका पति परदेसी जानि।
चलत रहत आवत मिलत चारिभेद उनमानि॥

प्रथम प्रवत्स्यतप्रेयसी प्रोषितपतिका फेरि ।
आगच्छतपतिका बहुरि आगतपतिका हेरि ॥

प्रवत्स्यतप्रेयसी सवैया ।

बात चली यह है जब तें तबतें चले काम के तीर हजारन । भूख औ प्यास चली मन तें अँसुआ चले नैनन तें सजि वारन ॥ दास चलीं करतें बलया रसना चली लंक तें लाग्यो अवारन । प्रान के नाथ चले अनतै तनतें नहि प्रान चले किहि कारन ॥ १९९ ॥

प्रोषितपतिका ।

सांझ के ऐबे की औधि दै आये बितावन चाहत याहू बिहानहिं । कान्ह जू कैसे दया के निधान हौ जानो न काहू के प्रेम प्रमानहि ॥ दास बड़ोई बिछोह कै मानती जात समीप के घाट नहानहिं । कोस के बीच कियो तुम डेरो तौ को सकै राखि पियारी के प्रानहि ॥२००॥

आगच्छतपतिका ।

बाम दई कियो बाम भुजा अँखिया फरकै

को प्रमान टरो सो । झूठो सँदेसिया औ सगु-
नौती कहैयन को पर्यो एक परोसो ॥ दास
जू प्रीतम की पतिया पतियात जो है पतियाइ
मरो सो । भागभरो सोई छोड़ि दियो हम का
गहिये अब काग भरोसो ॥ २०१ ॥

आगतपतिका ।

देखि परै सब गात कटीले न ऐसे में ऐसी
प्रिया सकै कोइ कै । आदर हेत उठै प्रति रोम
है दास यों दीनदयालता जोइ कै ॥ कन्त बि-
देसी मिले सुख चाहिये प्रानप्रिया तू मिलै
किमि रोइ कै । जीवननाथ सरूप लख्यो पै
हमै मलिनी निज आंखिन धोइ कै ॥ २०२ ॥

उत्तमादि भेद दोहा ।

जितनी तिय बरनी ति सब तीनभांति की जानि ।
तिन्हैं उत्तमा मध्यमा अधमा नाम बखानि ॥
उत्तम मान बिहीन है लघु मध्यम मधिमान ।
बिनऽपराधही करत है अधम नारि गुरुमान ॥

उत्तमा यथा सवैया ।

बावरो भागनि तें पति आवत जो मति मोहै अनेक तिया को । भोर को आवनि कुंज बिहारी को मेरो तौ दासजू ज्यारो जिया को । आजु तैं मो सिख ले तू अली दै गली तजि सोखनि छोछी छिया को । प्रानपियारे तें मान करै तो कसाइनि कूर कठोर हिया को ॥२०५॥

मध्यमा यथा सवैया ।

मारी निसा कठिनाई धरे रहै पाहन सो मन जात बिचारो । दास जू देखते धाम गोपाल को पाला सो होत घरी धुरि न्यारो ॥ नेह की बातें कहो तुम एतो पै मो मन होत न नेकहु न्यारो। पूस को भानहू वाइ कृसान सो मूढ़ अज्ञान सो मान तिहारो ॥ २०६ ॥

अधमा यथा कवित्त ।

माधो अपराधो तिल आधो ना विचारो शुद्ध साधही ते राधे हठ आराधन ठानती । दास यों अली के बैन ठोकै करि मानो ज्ञान ह्वैहै दुख

जी के यह नीके हम जानती ॥ वाकी सिख पाई वहै ध्यान धन ठहराई और की सिखाई कछू कानन न आनती । मान करि मानिनी मनाए मानै बावरो न कोऊ गुरु मानै सतगुरु मान मानती ॥ २०७ ॥

इति आलम्बन विभाव ।

अथ उद्दीपन विभाव सखीजन वर्णन दोहा ।

तिय पिय की हितकारिनी सखी कहैं कविराव।
उत्तम अरु मध्यम अधम प्रगट दूतिका भाव ।

साधारन सखी यथा कवित्त ।

छबि ना बरनि जिन सुरति बढ़ाई नई लगनि उपाय घात घातन मिलाई है । मान में मनायो पीर बिरह बुझायो पद देस में बसीठो करि चीठो पहुंचाई है ॥ दास जू संजोग मैं सुबैनन सुनाय मैन प्रीति न बढ़ाय रस रीति न बढ़ाई है। चन्द्रावलि राधा जू की ललिता गोपाल जू की सखियां सोहाई कैंधो भाग की भलाई है ॥ २०८ ॥

नायिका हित सखी।

तेरी खीझिवे की रुख रीझ मनमोहन की यातें वहै साज साजि साजि नित आवतै। आपुही तें कुंकुम की छाप नखक्षत गात अंजन अधर भाल जावक लगावतै॥ ज्यों ज्यों तू अयानी अनखानी दरसावै त्यों त्यों स्याम कृत आपने लहे को सुख पावतै। तिनही खिसावै दास जौ तू यों सुनावै तुम योंही मनभावतै हमारे मन भावतै॥ २१०॥

नायक हित सखी।

केसरि कै केसर को उर मैं नखच्छत कै कर लै कपोलनि मैं पीक लपटाई है। हारावली तोरि छोरि कचनि बिथोरि खोरि मोहू गति भोरि इत भोरे उठि आई है॥ पीको बिन प्रेम कोऊ दास इहि नेम परपंच करि पंच मैं सोहागिनि कहाई है। हांती करि हा ती मोहि ऐसी ना सोहाती भेष कान्ह है तकत यह कैसी चतुराई है॥ २११॥

उत्तमा दूती यथा सवैया।

मोहि सो भूल भई सिगरी बिगरी सब आजु सँवार करौंगी। बीर की सौं बलबीर बलाय ल्यौं आज सुखी इकबार करौंगी॥ दास निसा लौं निसा करिये दिन बूड़ते ब्यौंत हजार करौंगी। आज बिहारी तिहारी पियारी तिहारे मैं हीय को हार करौंगी॥ २१२॥

मध्यम दूती यथा कबित्त।

प्यारी कोमलांगी औ कुमुदबंधुबदनी सुगंधन की खानि को क्यों सकत सताय हौ। बेनी लखि मोर दौरै मुख को चकोर दास स्वासनि को भौंर किन किन को बरायहौं॥ वह तो तिहारे हेत अबही पधारै पै धौं तुमही बिचारो कैसे धीरज धराय हौं॥ ह्वै है काम पालकी बरसगांठि वाही मिस अब मैं गोपाल की सौं पालकी मैं ल्यायहौं॥ २१३॥

अधम दूती यथा सवैया।

किल कंचन सो वह अंग कहा कहँ रंग

कदंबन के तुम कारो। कहँ कंज कली बिकसी वह होइ कहा तुम सोइ रही गहि डारो ॥ नित दास हा ल्यावही ल्याव कही कछु आपनो वाको न भेद बिचारो। वह कौंल सी गोरी किसोरी कहाँ औ कहाँ गिरधारन पानि तिहारो ॥ २१४ ॥

सखीकर्म्म—दोहा।

मण्डन सन्दरसन हँसी संघट्टन सुभ धर्म ।
मानप्रवर्जन पत्रिकादान सखिन के कर्म ॥२१५॥
उपालम्भ सिच्छा स्तुती विनय यहृचा उक्ति ।
बिरहनिवेदनजुत सुकवि बरनत हैं बहु जुक्ति ॥
इन बातनि पिय तिय करै जहाँ सुऔसर पाइ।
वहै स्वयंदूतत्व है सो हौं कहौं बनाय ॥२१७॥

मण्डन यथा—सवैया।

प्रीतमपाग सँवारी सखी सुघराई जनायो प्रिया अपनी है। प्यारीकपोल को चित्र बनावत प्यारे बिचित्रता चारु सनी है ॥ दास दुहूं को दुहूं को सवारिबो देखि लह्यो सुख लूटि

घनो है। वै कहैं भावतो कैसो बनो वै कहैं मन-
भावती कैसी बनी है ॥ २१८ ॥

मन्दरसन यथा ।

आहट पाय गोपाल को बाल सनेह के गाँ-
सनि सो गँसि जाती। दौरि दरीची के सामुहें
ह्वै दृग कोरि सो भौंहन में हँसि जाती ॥ दास
न जानत कोऊ कहूं तन मैं मन मैं छवि मैं
बसि जाती। प्यारे की तारे कसौटिन में अपनी
छवि कञ्चन सी कसि जाती ॥ २१९ ॥

काहे को दास महेस महेस्वरि पूजनकाज
प्रसूनन तूरति । काहे को प्रात नहाननि कै
बहु दाननि दै व्रत संजम पूरति ॥ देखरी देख
अँगोटि कै नैननि कोटि मनोज मनोहर मूरति।
येई हैं लाल गोपाल अली जिहि लागि रहै
दिन रैन बिसूरति ॥ २२० ॥

परिहास ।

मोहन आपनो राधिका को बिपरीति को
चित्र विचित्र बनाय कै। दीठि बचाय सलोनी

की आरसी मैं चपकाय गयो बहराय कै॥ घूमि घरीक में आय कह्यो कहा बैठी कपोलन चन्दन लाय कै। दर्पन त्यों तिय चाह्यो तहीं सिर नाय रही मुसकाय लजाय कै॥ २२१॥

संघट्टन यथा।

लेहु जू ल्याई सुगेह तिहारे परे जिहि नेह सँदेह खरे मै। भेंटो भुजा भरि मेटो व्यथा निसि मेटो जु तौ सब साध भरे मै॥ सम्भु ज्यों आधेही अङ्ग लगावो बसायो कि श्रीपति ज्यों हियरे मै। दास भरी रस केलि सकेलीये आनँदबेलि सी मेलि गरे मै॥ २२२॥

आपने आपने गेह के द्वार तें देखा देखी कै रहे हिलि दोऊ। त्योंही अँध्यारो कियो झपि मेघनि मैन के बान गए खिलि दोऊ॥ दास चितै चहुंघा चितचाय सो औसर पाय चले पिलि दोऊ। प्रेम उमंडि रहे रसमंडित पंतर की मड़ई मिलि दोऊ॥ २२३॥

मानप्रवर्जन यथा—कवित्त।

पंकज-चरन की सौं जानु सुबरन की सौं

लंक तनु की सौं जाकी अलख महति है । ट-
बली तरंग कुच सम्भु जुग संग की सौं हारावलि
गंग की सौं जो उत बहति है ॥ श्रुति संनुधारी
वा बदन द्विजराज की सौं एरी प्रानप्यारी कोप
कापै तू गहति है । साँची हौं कहति तुव बेनी
सौं कमलनैनी तेरी सुधिसुधा मोहिँ ज्यावति
रहति है ॥ २२४ ॥

पत्रिकादान यथा सवैया ।

कैसो री कागद ल्याई नई ? पतिया है दई
वृषभानकुमारी । भीगी सु क्यों ? अँसुआन के
धारे जरी कहि कैसे? उसासन जारी ॥ आखिर
दास देखाई न देत ? अचेत हुती बहुतै गिर-
धारी। एती तौ जीय में ज्वाल रही जब छाती
धरे रहै पाती तिहारी ॥ २२५ ॥

उपालम्भ यथा—कवित्त ।

मुख द्विजराज अधिकारी मखतूल अल-
कनि को है तासों बिन काज दुख लहिये ।
नैन श्रुतिसेवी सर ह्वै के उर लागत है नाक

मुकुतन संग ताकि दाह दहियै ॥ दास मन-
भावती न भावती चलन तेरो अधर अमी कै
अवलोकि मोहि रहियै। ह्वै कै सम्मुरूपी है उरज
ये कठोर ये कठोरताई एती करैं कासो जाइ
कहियै ॥ २२६ ॥

शिक्षा यथा — सवैया।

वाही घरी तें न ज्ञान रहै न रहै सखि-
यान की सीख सिखाई। दास न लाज को साज
रहै न रहै सजनी गृहकाज की घाई ॥ ह्यां
सिख साध निवारे रहो तबहीं लों भटू सब
भाँति भलाई। देखत कान्है न चेत रहै री न
चित्त रहै न रहै चतुराई ॥ २२७ ॥

स्तुति यथा — कबित्त।

राधे तो बदन सम होतो हिमकर तो अ-
मर प्रति माँसन बिगारते क्यों रहते ?। क्योंहूं
कर पद सरि पावते जो इन्दीवर सर में गड़े तो
दिन टारते क्यों रहते? ॥ दास दुति दन्तन की
देख्यो दई दारिमै तो पचि पचि उदर बिदारते

क्यों रहते ?। एरी तेरे कुचसरि होत करिकुम्भ तो वै उन पर लै लै छार डारते क्यों रहते ? ॥

बिनय यथा—सवैया।

जात भए गृहलोग कहूं न परोसहू को कछु आहट पैये। दीनदयाल दया करि कै बहु द्योसनि को तनताप बुझैये॥ दास ये चन्दन चाँदनी चौसर औसर बीते न औसर पैये। गोहन छाड़ि कछू मिसकै मनमोहन आज यहां रहि जैये॥ २२९॥

जथा।

सुनि चन्दमुखी रहि रैनि लख्यो मैं अनन्दसमूहसन्यो सपनो। हगमीचनि खेलत तो सँग दास दयो बिधि फेरि सु बालपनो॥ लगी ढूढ़न चम्पलता लतिका चलि ता छन मोहिं बन्यो छपनो। जनु पावै नहीं ते छिपाय रही तू ओढ़ाय कै अंचलही अपनो॥ २३०॥

कवित्त।

गति नरनारिन की पच्छी देहधारिन की

टन के अहारिन को एके बार बंधई । दीनी बिकलाई सुधि बुधि बिसराई ऐसी निरदै कसाई तोसो करि न सकै दई ॥ बिधि के सँवारे कान्ह कारे औ कपटवारे दास जू न इनकी अनीति आज की नई । सुर को प्रकासिनि अधर-सेजवासिनि सु बंस की ह्वै बंसी तू कुपंथिन कहा भई ॥ २३१ ॥

बिरहनिवेदन यथा—सवैया ।

दास जू आलस लालसा त्रास उसासन पास तजै दिन रातै । चिन्ता कठोरता दीनता मोह उदीनता संग कियो करै बातै ॥ आधि उपाधि असाधिता व्याधि न राधिके कैसहू ह्वै सकै हातै । तेरे मिलाप बिना ब्रजनाथ इन्हैं अपनाये रहै तिय नातै ॥ २३२ ॥

उद्दीपन बिभाव यथा—कबित्त ।

बाग के बगर अनुरागर की देखतिही सुखमा सलोनी सुमनावलि अछेह की। हार लगि जाती फेरि ईठि ठहराती बोलै औरनि रिसाती

माती आसव अदेह की ॥ दास अब नीके ऊभि भरति उसासु री सु बाँसुरी की धुनि प्रति पाँसुरी में बेह की । गाँसी गाँसी नेह की बिसानी झरमेह की रही न सुधि तेह की न देह की न गेह की ॥ २३३ ॥

अनुभाव लक्षण दोहा ।

सु अनुभाव जिहि पाइये मन को प्रेम प्रभाव ।
याही में बरनै सुकबि आठो सात्विक भाव ॥

यथा सवैया ।

जो बँधिही बँधि जात है ज्यों ज्यों सुनीवो तनीन को बाँधति छोरति । दास कटीले ह्वै गात कँपै बिहँसौंहीं हँसौंहीं लसै दृग लों रति ॥ भौंह मरोरति नाक सकोरति चीर निचोरति औ चित चोरति । प्यारो गुलाब के नीर में बोरयो प्रिया लपटे रस भीर में बोरति ॥२३५॥

सात्विक भाव—दोहा ।

स्तम्भ स्वेद रोमांच स्वरभङ्ग कम्प वैवर्ण ।
अश्रु प्रलाये स्वात्विकी भाव के उदाहर्ण ॥

यथा कवित्त।

कहि कहि प्यारी अबै चढ़ती अटारिन पै काहि अवलोक्यो यह कैसो भयो ढंग है?। औरे ओर तकति चकति उचकति दास खरी सखि पास पै न जानै कोउ संग है॥ थकि रही दीठि पग परत धरनि नीठि रोमनि उमग भो बदलि गयो रङ्ग है। नैन छलकोहैं वर बैन बलकोहैं औ कपोल फलकोहैं झलकोहैं भये अङ्ग हैं॥२३७॥

विभिचारी भेद।

निर्वेद ग्लानि शंका असूया औ मदश्रम आलस दीनता चिन्ता मोह स्मृति धृति जानि। ब्रीड़ा चपलता हर्ष आवेग जड़ता बिखाद उतकण्ठा निद्रा गर्ब अपस्मार मानि॥ स्वपन बिबोध अमरख अवहित्था गनि उग्रता औ मति व्याधि उन्माद मरन आनि। त्रास औ बितर्क व्यभिचारी भाव तैंतिस ये सिगरे रसनि के सहायक से पहिचानि॥ २३८॥

यथा कवित्त।

सुमिरि सकुचि न थिराति सकि चसति

तरति उग्र बानि सगिलानि हरखाति है । उ-
नींदति अलसाति सोवत मधीर चौंकि चाहि
चित अमितसगर्व अनखाति है ॥ दास पिय नेह
छिन छिन भाव बदलति स्यामा सबिराग दीन
मति के मखाति है । जल्पति जकाति कहरत
कठिनाति माति मोहति मरति बिललाति बि-
लखाति है ॥ २३९ ॥

थाई भाव लच्छन दोहा ।

थाई भाव सिँगार को प्रीति कहावै मित्त ।
तिहि बिन होत न एकऊ रससिंगार कबित्त ॥
थाई भाव बिभाव अनुभाव सँचारी भाव ।
पैये एक कबित्त मैं सो पूरन रसराव ॥ २४१ ॥

यथा कवित्त ।

आज चन्द्रभागा चंपलतिका बिसाखा को
पठाई हरि बाग तें कलामैं करि कोटि कोटि ।
सांझ समैं बीथिन मैं ठानी दृगमीचनी भोराई
तिन राधे को जुगुति कै निखोटि खोटि ॥ ल-
लिता के लोचन मिंचाय चन्द्रभागा सो दुरायबे

को ल्याइ्है तहांई दास पोटि पोटि। जानि जानि धरी तिय बानी रसभरी सब आली तिहि घरी हँसि हँसि परीं लोटि लोटि ॥२४२॥

शृंगार हेत लक्षण दोहा।

कहत सँजोग बियोग द्वै हेत सिँगारहि लोग।
संगम सुखद सँजोग है बिछुरे दुखद बियोग ॥

संयोग शृंगार यथा कवित्त।

जानु जानु बाहु बाहु मुख मुख भाल भाल सामुहें भिरत भट मानो थरु थरु है। गाढ़े ठाढ़े उरज ढलैत नख घाय लेत ढारे ढिग कारन सं-जोगी बीर बरु है॥ टूटै नग छूटै बान सिंजित बिरद बोलै मसर न मारु बाजै बाजत प्रवरु है। राधे हरि क्रीड़त अनेकनि समरकला मानी मढ़ी सोभा औ सिँगार सो समरु है ॥ २४४ ॥

सुरतान्त यथा कवित्त।

उठी परजंक तें मयंकवदनी को लखि अंक भरिवे को फेरि लाल मन ललकैं। दास अंगि-राति जमुहाति तकि भुकि जाति दीने पट अं

तर यतन ओप झलकैं ॥ तैसे अंग अंगन खुलि हैं स्वेदजलकन खुली अलकन खरी खरी छबि छलकैं । अधखुली आँगी हद अधखुली नखरेख अधखुली हांसी तैसी अधखुली पलकैं ॥ २४५ ॥

हाव भेद दोहा ।

अलंकार बनितान के पाय सँजोग सिंगार ।
होत हाव दस भांति को ताको सुनो प्रकार ॥
लीलाललितबिलासकिलकिंचितबिहितबिक्छित्त।
मोट्टाइत कुट्टमिति बिब्बोक बिमोहित मित्त ॥

लीला हाव लच्छन दोहा ।

स्वांग केलि को करत हैं जहां हास्य रसभाव ।
दंपति सुख क्रीड़ा निरखि कहिये लीला हाव ॥

यथा कबित्त ।

चाँदनी में चैत की सकल ब्रजबारी बारी दास मिलि रासरस खेलन भुलानी है । राधे मोर मुकुट लकुट बनमाल धरि हरि ह्वै करत तहां अकह कहानी है ॥ त्योंही तियरूप हरि आइ तहिँ धाइ धरि कहिकै रिसौहैं चलो बो-

ल्यो नँदरानी है। सिगरी भगानी पहिचानी प्यारी मुसकानी छूटिगो सकुच सुख लूटि सर-सानी है ॥ २४९ ॥

केलिहाव सवैया।

नाते की गारी सिखाय कै सारी को पींजरो लै पिय के कर दीने। मैना पढ़ो सुनतै वहि दास जू बार हजार उहै रट लीने ॥ बूझति आली हँसौंहैं कहा कहैं होत खिसौंहैं लला रस भीने। आपु अनंद भरी हँसिबो करैं चञ्चल चारु दृगञ्चल कीने ॥ २५० ॥

ललितहाव लक्षण—दोहा।

ललितहावबरन्योनिरखि तियकोसहज सिँगारु। अभरन पट सुकुमारता गति सुगन्धता चारु ॥

यथा कवित्त।

पङ्कज से पावन मैं गूजरी जराउन की घाँ-घरे को घेर दीठि घेर घेर रखियाँ। दास मन मोहिनी मनिन के बनाव बने कण्ठमाल कञ्चुकी हवेलहार पखियाँ ॥ अंगन की जोति जाल फै-

लावत रङ्ग लाल आवत मतङ्ग चाल लीने सङ्ग सखियाँ । भागभरी भामिनी सोहाग भरी सारी सुही माँग भरी मोती अनुराग भरी अँखियाँ ॥

सुकुमारता यथा—सवैया ।

घाँघरो झीन सो सारी महीन सी पीन नितम्बनि भार उठ्यो खचि । दास सुबास सिँगार सिँगारति बोझनि ऊपर बोझ उठै मचि ॥ खेद चलै मुखचन्दनि चूवै डग द्वैक धरे महि फूलनि सो सचि । जात है पङ्कज बारि बयारि सो वा सुकुमारि को लङ्क लला लचि ॥ २५३ ॥

बिलासहाव लक्षण—दोहा ।

बोलनि हँसनि बिलोकिबो और भृकुटि को भाव । क्योंहूं चकित सुभाव जहँ सो बिलास है हाव ॥

यथा कवित्त ।

आदरस आगे धरि आँगन में बैठी बाल इन्दु से बदन को बनाव दरसति है । भौंहन मरोरि मोरि अधर सकोरि नाक अलक सुधारति कपोल परसति है ॥ सखी व्यंग्य बोलि को

उठावति बिहँसि कञ्च चोलीतर सुखमा अमोली सरसति है। खुलित पयोधर प्रकास अस दास नन्दनन्द जू के नैननि अनंद बरसति है ॥२५५॥

किलकिञ्चितहाव—दोहा।

हरष बिषाद श्रमादि जो हिये होत बहु भाव।
भाव सबल शृङ्गार को सो किलकिञ्चितहाव॥

यथा कवित्त।

कान्हर कटाच्छन को जाय भरि लाई बाल बैठीहो जहाँई बृषभान महरानी है। दास दृग साधन की पूतरी लौं आरि दृग पूतरी घुमरि वाही ओर ठहरानी है॥ केती अनाकानी कै जभानी अँगिरानी पै न अन्तर की पीर वह रूप बहरानी है। थकी थहरानी छबि छकी छहरानी धकधकी धहरानी जिमि लकी लहरानी है॥

चकितहाव यथा—सवैया।

आज को कौतुक देखिबे को हो कहा कहिये सजनी तू कहा रही। कैसी महाछबि छाये अनेक छबीलो छकाय हितै अहितै रही॥ ओट

तें चोट बिरी करी पीय के बार सुधारत बैठी जितै रही। चञ्चल चारु दृगञ्चल कै तब चन्द-मुखी चहुँ ओर चितै रही॥ २५८॥

विहितहाव लक्षण दोहा।

हिलिमिलि सकै न लाजबस जिये भरी अभिलाख।
ललचावै मन दै मनहिं बिहितहाव त्यों दाख॥

यथा कबित्त।

प्यारे केलिमन्दिर तें करत इसारे उत जा-इबे को प्यारीहू के मन अभिलाख्यो है। दास गुरुजन पास बासर प्रकास ते न धीरज न जात क्यौंहूं लाज डर नाख्यो है॥ नैन ललचौंहैं पै न क्योंहूं निरखत बनै ओठ फरकौहैं पै न जात कछु भाख्यो है। काजन के ब्याजवाही देहरी के सा-मुहें ह्वै सामुहें के भौन आवागौन करि राख्यो है॥ २६०॥

बिछित्तिहाव लक्षण—दोहा।

बन भूखन कै थोहरी भूखन छबि सरसाय।
कहत हाव बिछित्ति हैं जो प्रवीन कविराय॥

यथा कवित्त।

काहे को कपोलनि कलिन कै देखावती है कलिका सु पत्रन की अमल हथौटि है। आभरन जाल सब अंगन सँवारि कै अनंग की अनीसी कत राखति अगौटि है॥ दास भनि काहे को अन्यास दरसावती भयावन भुअंगिनि सी बेनी लौटि लौटि है। हम ऐसो आसिक अनेकन के मारिबे को कौल नैनी केवल कटाच्छ तेरी कोटि है॥ २६२॥

फेरि फेरि हेरि हेरि करि करि अभिलाख लाख लाख उपमा बिचारत है कहने। बिधिहि मनावै जो घनेरे दृग पावै तौ चहत याही संतत निहारतही रहने॥ निमिखि निमिखि दास रीझत निहाल होत लूटे लेत मानो लाख कोटिन के लहने। एरी बाल तेरे भाल चंदन के लेप आगे लोपिजात और के हजारन के गहने॥

मोट्टाइतहाव लक्षण—दोहा।

अनचाही बाहिर प्रगट मन मिलाप की घात।
मोट्टाइत तासों कहैं प्रेम उदीपति बात॥२६४॥

यथा सवैया।

पिय प्रात क्रिया करैं आँगन मैं तिय बैठी सुजेठिन के थल मैं। सुख के सुधि तें उमहै अँसुवा बहरावै जँभाइन के छल मैं॥ न अघानी जऊ सिगरी निसि दास जू कामकलानि कियो कल मैं। अंखियां झखियां ललकैं फिरि बूड़ने को हरि की छबि के जल मैं॥ २६५॥

मोहि न देखो अकेलियै दास जू घाटहू बाटहू लोग भरै सो। बोलि उठौ नीखरै तै लै नाम तौ लागि है आपनी दाउ अनैसो॥ कान्ह कुबानि सँभारे रहो निज वैसी नहीं तुम चाहत जैसो। ऐबो इतै करो लैन दही को चलैबो कहीं को कहीं कर कैसो॥ २६६॥

कुट्टमित लच्छण—दोहा।

केलि कलह को कहत हैं हाव कुट्टमित मित्त।
कछु दुखलै सुखसो सन्यौ जहँ नायक को चित्त॥

यथा सवैया।

रूखी ह्वै जैबो पियूख बगारिबो बंक बिलो-

किबो आदरिबो है। सौंहैं दिखायबो गारी सुनायबो प्रेम प्रसंसनि उच्चरिबो है॥ लातन मारिबो झारिबो बांह निसंक ह्वै अंकनि को भरिबो है। दास नवेली को केलि समै में नहीं नहीं कीबो हहा करिबो है ॥ २६८ ॥

बिब्बोकहाव लच्छण—दोहा ।

जहँ पीतम को करत है कपट अनादर बाल ।
कछु इरिषा कछु मद लिये सो बिब्बोक रसाल ॥

यथा सवैया ।

मान कै बैठी सखीन के सम्मत बूझिबे को पिय प्रेम प्रभाइन । दास दसा सुनि द्वार तें प्रीतम आतुर आयो भयो दुचिताइन ॥ बूझि रह्यो पै न हेत लह्यो कहूं अन्त कहा कै गह्यो तिय पाइन । आली लखै बिन कौड़ी को कौतुक ठोढ़ी गहै बिहँसै ठकुराइन ॥ २७० ॥

देखती हौ इहि ढीठे अहीर को कैसे धौं भीतरी आवन पायो । दास अधीन ह्वै कीनो सलाम न दूरि तें दीन ह्वै हेत जनायो॥ बैठि-

गो मेरे प्रजङ्कहो ऊपर जानें को याको कहाँ मन भायो। गाइन की चरवाही बिहाय कै बे-परवाही जनावत आयो॥ २७१॥

विभ्रमहाव लक्षण—दोहा।

कहियत विभ्रमहाव जहँ भूलि काज ह्वै जाइ।
कौतूहल बिच्छेय बिधि याही में ठहराइ॥२७२॥

यथा कवित्त।

उलटी यों सारी किनारीवारी पहिचानो यह कै प्रकास या जुन्हाई बिमलाइ मैं। दास उलटी पै बेंदी उलटी ये आँगी उलटोई अत-रौटा पहिरे हो उतलाइ मैं॥ भेदन बिचाख्यो गुञ्ज मालै औ गुलीक मालै नीली एकपटी अरु मिली एकलाइ मैं। लली कित गली कित जाती हौ निडर चली कसे कटि कङ्कन औ किङ्किनि कलाइ मैं॥ २७३॥

कौतूहलहाव यथा—सवैया।

जास सु कौतुक सौध लै सौध पै धाय चढ़ी ब्रषभानकिसोरी। दास न दूरि तें दीठि थिरै

सु दरी दरी झाँकतिही फिरै दौरी ॥ लोग लग्यो इहि कौतुक कौतुक कौतुकवारे को जातही भोरी । चन्द उदोत इतोत चितोत सखी सब की चखचारु चकोरी ॥ २७४ ॥

विच्छेयहाव यथा ।

आज तौ राधे जू कैसी थकी सी तकै चहुं-ओर बिहाइ निमेखै । अंगनि तोरै खरो अँगि-राय जँभाइ भुकै पै न नींद बिसेखै ॥ कैती भरे बिन काज की भाँवरी बावरी सी कहिये इहि लेखै । दास कोऊ कहै कैसी दसा है तौ सूखी सुनावती साँवरे देखै ॥ २७५ ॥

मुग्धहाव लक्षण—दोहा ।

जानि बूझि कै बौरई जहाँ धरति है बाम ।
मुग्धहाव तासों कहैं विभ्रमही के धाम ॥२७६॥

यथा सवैया ।

लाहु कहा कहो बेंदी दिये औ कहा है तरौना कै बेह गड़ाये । कङ्कन पीठि हिये ससि रेख की बात बनै बलि मोहि बताये ॥ दास

कहा गुन श्रोंठ में अञ्जन भाल में जावक लीक लगाये। कान्ह सुभावही भूकुति हौं मैं कहा फल नैननि पान खवाये ॥ २७७ ॥

हेलाहाव लक्षण—दोहा।

हावन में जहँ होत है निपटै प्रेम प्रकास ।
तासों हेला कहत हैं सकल सुकविजन दास ॥
एक हाव में मिलत जहँ हाव अनेकनि फेरि ।
समुझि लेहिंगे सुमति यह लीला हावै हेरि ॥

यथा कवित्त।

पिय को पहिराव प्यारी पहिरे सुभाव पिय भाव ह्वै गई है सुधि आपनी न भावती। दास हरि आइ त्योंही सामुहैं निहारे खरे राति मन-भावती को देखि मनभावती ॥ आपनोइ याले मुकुर लै उनमानि कै गोपालै आपनीयै प्रति-विम्ब ठहरावती।ल्याउ ल्याउ ज्याउ ज्याउ रूप रस प्याउ प्याउ राधे राधे कान्हही लौं ललितै सुनावती ॥ २८० ॥

इति संयोग शृङ्गार।

अथ वियोग शृङ्गार—दोहा।

बिन मिलाप सन्ताप अति सो वियोग शृङ्गार।
तवन हावहू तेहि कहैं पण्डित बुद्धि उदार॥
ताके चारि बिभाव हैं इक पूरबानुराग।
बिरह कहत मानहिं मिलत पुनि प्रबास बड़ भाग
अनुरागी बिरही बहुरि मानी प्रोषित मानि।
चहूं बियोग बियानि तें चारो नायक जानि॥

पूर्वानुराग।

सो पूरबानुराग जहँ बढ़े मिले बिन प्रीति।
आलम्बन ताको गनै सज्जन दरसन रीति॥२८४॥
दृष्टि श्रुती द्वै भाँति के दरसन जानो मित्र।
दृष्टि दरस परतक्ष सपन छाया माया चित्र॥

प्रत्यच्छ यथा—कवित्त।

आली दौरि दरस दरस लेहि लेरी इन्दु-बदनी अटा मैं नँदनन्द भूमि थल मै। देखा-देखी होतही सकुच छूटी दुहुन की दोऊ दुहूं हाथनि बिकाने एक पल मैं॥ दुहूं हिय दास खुरी अरी मैन सर गाँसी परी दिढ़ प्रेम फाँसी

दुहुंन के गल मैं। राधे नैन पैरत गोविन्द तन पानिप मैं पैरत गोविन्द नैन राधे रूप जल मैं॥

स्वप्न यथा—सवैया।

मोहन आयो यहां सपने मुसुकात औ खात बिनोद सो बीरो। बैठी हुती परजङ्क में हौंहूं उठी मिलबे कहँ कै मन धीरो॥ ऐसे में दास बिसासिन दासी जगायो डोलाय किवार जञ्जीरो। झूठो भयो मिलिबो ब्रजनाथ को एरी गयो गिरि हाथ को हीरो॥ २८७॥

छाया यथा।

आज सवारहीं नन्दकुमार हुते उत न्हात कलिन्दजा माही। ऊपर आइ तू ठाढ़ी उतै कछु जाय परी जल में परछाँही॥ तातें ह्वै मोहित श्रीमनमोहन दास दसा बरनी मोहि पाँही। जानति हौं बिन तोहि मिले ब्रजजीवन को अब जीवन नाही॥ २८८॥

मायादर्शन यथा।

कालि जु तेरी अटा की दरी मैं खरी हुती

एक प्रदीप सिखारी। मैं कह्यो मोहन राधे वहै हरि हेरि रहे पगि प्रेमन भारी॥ तातें तौ दास जू बारही बार सराहत तोहि निसा गई सारी। या छवि चाहि कहाधौं करैंगे महा सुख पुञ्जनि कुञ्जबिहारी॥ २८९॥

चित्रदर्शन यथा।

कौनि सी औनि को है अवतंस कियो कहि बंस कृतारथ काको। नाम है पावन जन्म भये किन पातिन के अधरा अधरा को॥ दास दै वेगि बताय अली अब मौन न प्रान निदान है वाको। सोहै कहा वह रूप उजागर मोहै हियो यह कागरजा को॥ २९०॥

श्रुतिदर्शन—दोहा।

गुनन सुने पत्री मिले जब तब सुमिरन ध्यान।
दृष्टिदरस बिन होत है श्रुति दरसन यों जानि॥

यथा कवित्त।

जब जब रावरो बखान करै कोऊ तब तब छबि ध्यान कै लखोई उनमान तै। जाने पति-या न पतियान की प्रवीनताई बीन-सुर लीन

ह्वै सुरन उर आनते ॥ चन्द अरबिन्दनि मलि-न्दनि सो दास मुख नैन कचकान्ति से सुनेहो नेह ठानते । तन मन प्रानन बसीये सो रहति हौ कहति हौ कि कान्ह सोहिं कैसे पहिचानते ॥

विरह लक्षण —दोहा ।

मिलन होत कबहूं छिनक बिछुरन होत सदाहि ।
तिहि अन्तर के दुखन को बिरह गुनो मन माहि ॥

यथा कवित्त ।

जब तें मिलाप करि केलिन कलाप करि आनँद अलाप करि भाये रसलीन जू । तब तें तो दूनो मन होत छिन छिन छीन पूनो को कला ज्यों दिन दिन होति दीन जू ॥ दास जू सतावन अतनु अति लाग्यो अब ज्यावन-जतन वाको तुमही अधीन जू । ऐसोई जो हिरदै को निरदै विनारो ही तो काहे को सिधारे उत प्यारे परवीन जू ॥ २९४ ॥

मानवियोग लक्षण—दोहा ।

जहँ इरषा अपराध तें पिय तिय ठानै मान ।
बढ़ वियोग दसहूं दसह मानबिरह सो जान ॥

यथा कवित्त ।

नींद भूख प्यास उन्हैं व्यापत न तापसी लौं ताप सी चढ़त तन चन्दन लगावे तें । अतिही अचेत होत चैतहू के चाँदनी में चन्द्रकन खाये तें गुलाब-जल न्हाये तें ॥ दास भो जगतप्रान प्रान को बधिक औ कृसान तें अधिक भये सुमन बिछाये तें । नेह के लगाये उन तो तैं कछु पाये तेरो पाइबो न जान्यौ अब भौंहनि चढ़ाये तें ॥ २९६ ॥

प्रवासवियोग — दोहा ।

पिय बिदेस प्यारी सदन दुस्सह दुःख प्रवास ।
पत्री संदेसनि सखो दुहूदिसि करै प्रकास॥२९७॥

प्रोषितनायक यथा — कवित्त ।

चन्द चढ़ि देखौं चारु आनन प्रबीन गति लीन होत मात गजराजनि को ठिलि ठिलि । बारिधर धारनि तें बारन यै ह्वै रहै पयोधरनि कूँ रहै पहारनि को पिलि पिलि ॥ दई निरदई दास दीनो है बिदेस तऊ करौं ना अँदेसो तुव

ध्यानही सो हिलि हिलि । एक दुख तेरो है दुखारी नत प्रानप्यारी मेरो मन तोसों नित आ-वत है मिलि मिलि ॥ २९८ ॥

लहलह लता डहडह तरु डारैं गहगह भयो गजन कै आयो कौन वरिहै । चहचह चिरी-धुनि कहकह केकिन की घहघह घनसोर सुनि ते अखरिहै ॥ दास यह यहहीं पवन डोलि महँ महँ रहरह यहई सुनावत दवरि है । सहसह समर की वहवह बीज भई तहँ तहँ तिय प्रान लीबे की खबरि है ॥ २९९ ॥

दसौ भेद—दोहा।

दरसन सकल पुकार पुनि इनै तिहुन में मानि।
घहूं भेद में दास पुनि दसौ दसा पहिचानि ॥
लालस चिन्ता गुनकथन स्मृति उद्वेग प्रलाप ।
उन्मादहि व्याधिहि गनो जड़ता मरन सँताप ॥

लालसा दसा।

नैन बैन मन मिलि रहै चाह्यो मिलन सरीर ।
कथन प्रेम लालसदसा उर अभिलाख गँभीर ॥

यथा सवैया।

बारहो मास निरास रहैं ज्यों चहै वहै चातक स्वाति के बुन्दहि। दास ज्यों कञ्ज के भानु को काम बिचारैं न घाम के तेज के तुङ्गहि॥ ज्यों जलही में जियैं झषियां लखि आजउ सङ्गति के दुख द्वन्दहि। त्यों तरसाय मरैं सखियां अँखियां चहैं मोहनलाल मुकुन्दहि॥ ३०३॥

चिन्तादसा लक्षण - दोहा।

मनसूबनि तं मिलन को जहँ सङ्कल्प विकल्प।
ताहि कहैं चिन्तादसा जिनकी बुद्धि अनल्प॥

यथा सवैया।

ये विधि जो बिरहागि के बान सों मारत हौ तो इहै मर मांगौ। जौ पसु होंउ तऊ मरि कै सहूं पावरी ह्वै हरि के पग लागौं॥ दास पखेरुन में करौ मोर जु नन्दकिशोर प्रभा अनुरागौं। भूषन कीजिये तौ बनमालहि जातें गोपालहि के हिय लागौं॥ ३०५॥

कवित्त।

काहू को न देती इन बातन को अन्त लै

इकान्त कान्त मानि कै अनन्त सुख ठानती। ज्यों
को त्यों बनाइ फेरि हेरि इत उत हिय राहि में
दुराइ गृह काजनि बितानती॥ दास जू सकल
भाँति होती सुचिताई फेरि ऐसी दुचिताई मन
भूलिहूं न आनती। चित्र के अनूप ब्रजभूप के
सरूप को जौ क्योंहूं आपरूप ब्रजभूप करि मा-
नती॥ ३०६॥

विकल्पचिन्ता यथा—सवैया।

कोठनि कोठनि बीच फिर्‌यौ वह भेष बनाय
भुलावनवारो। ऊपरी बात सुनाइ कै आपनी
लै गयो भीतरी भेद हमारो॥ दास लियो मन-
यौंटि अँगोटि उपाइ मनोज महीप जुझारो।
टूटै न क्यों सखी लाज गढ़ी पहिलेहि गयो
सुधि लै हरि कारो॥ ३०७॥

गुन कथन—दोहा।

दासदसा गुनकथन में सुमिरि सुमिरि तिय पीय।
अँग अंगनि बरनै सहित रसरङ्गनि रमनीय॥

यथा सवैया।

चन्द सो आनन की चटकीलता कुन्दन सी

तन की छबि न्यारी। मञ्जु मनोहर बार को बानक लागि किये अँखिया रतनारी ॥ होत बिदा गहि कण्ठ लगावन बाहु बिसाल प्रभा अधिकारी। वे सुधि श्रीमनमोहन की मन आनतही करैं बेसुधि भारी ॥ ३०९ ॥

स्मृतिदसा—दोहा।

जहँ इकाग्रचित करि धरै मनभावन को ध्यान।
सुस्मृतिदसा तेहि कहतहैं लखिलखि बुद्धिनिधान॥

यथा सवैया।

स्याम सुभाय मैं नेह निकाय मैं आपहू ह्वै गये राधिका जैसो। राधे करै अब राधे जु माधौ मैं प्रेम प्रतीति भई तन तैसो ॥ ध्यानही ध्यान तें ऐसो भयो अब कोऊ कुतर्क करै यह कैसो। जानत हौं इन्है दास मिल्यौ कहूं मंत्र महा परपिण्ड प्रवेसो ॥ ३११ ॥

राधिका आधिक नैननि मूंदि हियेही हिये हरि की छबि हेरति। मोरपखा मुरली बनमाल पितम्बर पावरी मैं मनु फेरति ॥ गाइ बजाइ

हियेही हिये लखि साँझ समै घरघाइ को घेरति । दास दसा निज भूले प्रकास हरेही हरेही हरो हरी टेरति ॥ ३१२ ॥

उद्देगदसा--दोहा ।

जहाँ दुःखरूपी लगै सुखद जु वस्तु अनेग ।
रहिबो कहुँ न सोहात सो दुसहदसा उद्देग ॥

यथा कवित्त ।

एरी बिन प्रीतम प्रकृति मेरी औरै भई तातें अनुमानौं अब जीवन अलप है। काल की कुमारी सो सहेली हितकारी लगै गीतरस बारी मानो गारी की जलप है॥ विष से बसन जारैं आग से असन लागैं जोन्ह को जसन काल मानहू कलप है। दसौदिसि दावा सी पजावा सी पवरि भई आवा सी अजिरि औनि तावा सी तलप है ॥ ३१४ ॥

पुनः सवैया ।

याहि खराद्यो खराद चढ़ाय बिरंचि बिचारि कछू मलिनाई । चूर वहै बगस्यो चहुँ ओर

तरैयन की जू लसै छबिछाई॥ दास नये जुगनू मग फैलै कहै रज सी द्रुतहू भरि आई। चोखन है किये घाम अनोखो ससी न अली यह है सबिताई॥ ३१५॥

प्रलापदसा दोहा।

सखिजन सो कै जड़नि सो तनमन भयौ सँताप।
मोह बैन बकिबो करै ताको कहत प्रलाप॥३१६॥

यथा सवैया।

तिहारे बियोग से दास बिभावरी बावरी सी भई डावरी डोलै। रसाल के बौरनि भौंरनि बूझती दास कहा तज्यौ नागर नौलै॥ खरी खरी हार हरी हरी डार चितै बररातो बरी बरी हौलै। अरी अरी बीर नरी नरी धीर भरी भरी पीर घरी घरी बोलै॥ ३१७॥

चन्दन पङ्क लगाय कै अङ्ग जगावति आगि सखी बरजोरै। तापर दास सुवासन ढारि कै देति है बारि बयारि झकोरै॥ पापो पपीहा न जीहा थकै तुव पी पी पुकार करै उठि भोरै।

देत कहे हा दहे पर दाह गई करि जाहु दई के निहोरे ॥ ३१८ ॥

जाति में होति सुजाति कुजाति न काननि फोरि करो अधसाँसी । केवल कान्ह की आस जियों जग दास करो किन कोटिन हाँसी ॥ नारि कुलीन कुलीननि से रमै मैं उनमै चह्यो एकन आँसी । गोकुलनाथ के हाथ बिकानी हौं वे कुलहीन तौ हौं कुलनासी ॥ ३१९ ॥

उन्माददसा—दोहा ।

सो उनमाद दसा दुसह धरै बौरई साज ।
रोइ रोज बिनवत उठै करै मोह मैं काज ॥ ३२० ॥

यथा सवैया ।

क्यों चलि फेरि बचायो न क्योंहू कहा बलि बैठे बिचारो बिचारनि । धीर न कोऊ धरै बल-बीर चह्यो ब्रजनीर पहार पगारनि ॥ दास जू राख्यो बड़े बरखा जिहि छांह में गोकुल गाइ गुआरनि । छैल जू सैल सो बूड़ा चहै अब भा-वती के अँसुआन के धारनि ॥ ३२१ ॥

पुनः कवित्त।

तो बिन बिहारी मैं निहारी गति औरई मैं बौरई के वृन्दनि अमेटत फिरत है। दाड़िम के फूलन मैं दास दाख्यौ दोनौं भरि चूमि मधु रसनि लपेटत फिरत है॥ खंजनि चकोरनि प-रेवा पिक मोरनि मराल सुक भौंरनि समेटत फिरत है। कासमीर हारनि को सोनजुही भारनि को चंपक की डारनि को भेटत फिरत है॥ ३२२॥

व्याधि दसा दोहा।

ताप दुबरई स्वास अति व्याधि दसा मैं लेखि।
आहिआहि बकिबो करै चाहिचाहि सब देखि॥

यथा कवित्त।

एरे निरदई दई दरस तो दे रे वह ऐसी भई तेरे या बिरह ज्वाल जागि कै। दास आस पास पुर नगर के बासी उत माहहू को जानति निदाहै रह्यो लागि कै॥ लै लै सीर जतन भि-गाए तन ईठि कोउ नीठि ढिग जावै तऊ आवै

फिरि भागि कै । दीसी मैं गुलाब जल सीसी में मगहि सूखै सीसी यों पघिलि परै अंचल सो दागि कै ॥ ३२४ ॥

क्षमता यथा सवैया ।

कोऊ कहै कर हाटक तंत में कोऊ परागन मैं उनमानी । ढूंढ़ह री मकरन्द के बुन्द मैं दास कहै जलजा गुन ज्ञानी ॥ क्षामता पाय रमी ह्वै गई परजंक कहा करै राधिका रानी । कौल मैं दास निवास किये हैं तलास किये हूं न पावत प्रानी ॥ ३२५ ॥

जड़ता दसा दोहा ।

जड़ता में सब आचरन भूलि जात अभ्यास ।
तम निद्रा बोलनि हँसनि भूख प्यास रसत्रास ॥

यथा सवैया ।

बात कहै न सुनै कछु काहू सो वा दिन तें भई वैसियै सूरति । साठो घरी परजंक परी सु निमेख भरी अँखियानि सो घूरति ॥ भूख न प्यास न काहू को त्रास न पास प्रतीन सो दास

कछू रति। कौने मुहूरत लीने कहो तुम कौन की है यह सोने की मूरति॥ ३२७॥

मरन दसा दोहा।

मरनदसा सब भांति सो ह्वै निरास मरिजाय।
जीवन मृत कै बरनिये तहँ रसभंग बराय ॥

यथा सवैया।

नारी न हाथ रही उहि नारी के भारनी मोहि मनोज महा की। जीवन ढंग कहा तें रह्यो परजंक में आधे रही मिलि जाकी॥ बात को बोलिबो गात को डोलिबो हेरै को दास उसास वृथा की। सीरी ह्वै आई तताई सिधाई कहो मरिवे में कहा रह्यो बाकी॥ ३२८॥

इति श्री भिखारीदासकायस्थकृते
श्रीशृङ्गारनिर्णयः समाप्तः।

॥ शुभंभूयात्॥

संक्षेप सूचीपत्र ।

भाषाभूषण (अलंकार का प्रसिद्ध ग्रन्थ है) =)

भावविलास (श्रीदेवकविकृत नायकाभेद का अपूर्व ग्रंथ) ।=)

भवानीविलास (यह भी देव कवि का रचा है) ।=)

भ्रमरगीत (महाराज रघुराजसिंह कृत) =)

रतनहजारा (रसनिधि कृत १००० दोहे) ॥)

रसप्रकाश (नायिकाभेद) ॥)

रसराज (प्रसिद्ध मतिराम कवि कृत नायिका भेद) ।)

रघुनाथशतक (श्रीरामचन्द्र के १५० कवित्त) =)

लक्ष्मीविलास (नायिका भेद) ।=)

शृङ्गारलतिका (कवित्त) ।=)

शिकारशतक (श्रीरामचन्द्रजी के शिकार का वर्णन महाराज रघुराजसिंह कृत) =)

श्यामासरोजनी ।)

सुन्दरशृङ्गार (प्राचीन सुन्दर कवि कृत नायिका भेद) ।)

सुजानरसखान (रसखान कवि की रसमई कविता है) =)

सुन्दरीसिन्दूर (अच्छी कविता है) =)

गोविन्दलहरी (हर मौसिम के गाने की चीजें) ।)

प्रेमतरङ्ग (गाने की उत्तमोत्तम चीजें) ।)

प्रेमसुधातरंगणी (रागों का वर्णन) ।)

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा

भारतजीवन प्रेस बनारस ।